❖ वर्ष 49 ❖ अंक 07 ❖ जुलाई 2022

₹ 15/-

हँसती दुनिया

हँसती दुनिया

● वर्ष 49 ● अंक 07 ● जुलाई 2022 ● पृष्ठ 52

बच्चों के बौद्धिक विकास की अनूठी पत्रिका

(पंजाबी, अंग्रेजी व मराठी में भी प्रकाशित)

प्रकाशक एवं मुद्रक : राज कुमारी
ने सन्त निरंकारी मण्डल, दिल्ली-9
हेतु एम. पी. प्रिंटर्स बी-220 फेस-II,
नोएडा-201 305 (उ.प्र.) से मुद्रित करवाकर
सन्त निरंकारी सत्संग भवन, सन्त निरंकारी कालोनी,
दिल्ली-09 से प्रकाशित किया।

सम्पादक
विमलेश आहूजा

सहायक सम्पादक
सुभाष चन्द्र

Phone : 011-47660200
Fax : 01127608215
E-mail : editorial@nirankari.org
Website : www.nirankari.org

Available on Website

सदस्यता शुल्क

देश	1 वर्ष	3 वर्ष	5 वर्ष	11 वर्ष
भारत/नेपाल	₹ 150	₹ 400	₹ 700	₹ 1500
यू.के.	£ 15	£ 40	£ 70	£ 150
यूरोप	€ 20	€ 55	€ 95	€ 200
अमेरिका	$ 25	$ 70	$ 120	$ 250
कनाडा/आस्ट्रेलिया	$ 30	$ 85	$ 140	$ 300

अन्य देश : उपरोक्तानुसार अमेरिकी डालर के बराबर राशि देय होगी।

स्तम्भ

4. सबसे पहले
5. सम्पूर्ण अवतार बाणी
6. अनमोल वचन
12. चित्रकथा
30. कभी न भूलो
34. किट्टी
44. पढ़ो और हँसो
49. रंग भरो
50. आपके पत्र मिले

हँसती दुनिया

कविताएं

7. इन्द्रधनुष कैसे बन जाता?
: घमण्डीलाल अग्रवाल

17. धरती का शृंगार है पेड़
: डॉ. ब्रजनंदन वर्मा

17. नन्हा पौधा
: गोविन्द भारद्वाज

29. मौसम बरसात का
: गफूर 'स्नेही'

29. बरसा पानी
: हरिप्रसाद धर्मक

38. आओ वृक्ष लगाएं
: सुमेश निषाद

38. मत काटो इन वृक्षों को
: डॉ. रामलखन निरंकारी

43. वर्षा जल,
पानी की प्याली
: कमलसिंह चौहान

47. आए बादल
: मीरा सिंह

कहानियां

9. पूजनीय कौन?
: महेन्द्र सिंह शेखावत

10. मगर और मछली
: ओमप्रकाश क्षत्रिय

18. साहूकार की हँसी
: परिधि जैन

31. खेल-खेल में
: रंजना बहल

39. दृढ़ निश्चय
: दर्शन सिंह 'आशट'

विशेष/लेख

8. कहाँ से आता है मानसून?
: कमल सोगानी

16. विशालकाय हिप्पो
: विभा वर्मा

21. रैकून
: परशुराम शुक्ल

22. ऐसे शुरू हुआ अमराईयों का चलन
: दीपांशु जैन

24. सैकरीन का आविष्कार
: राधेलाल 'नवचक्र'

26. इतिहास चाकलेट और कोकोआ वृक्ष का
: गोपाल जी गुप्त

46. तीन आँखों वाला जन्तु
: अर्चना सोगानी

50. आओ जानें!
: किरणबाला

सबसे पहले

मेरे जैसा कोई नहीं

इस संसार में जितने भी लोग हैं सबका अपना-अपना जीने का ढंग है। अपना-अपना स्वभाव है, अपनी-अपनी प्रकृति है। भले ही जुड़वां बहन हो या भाई हो; उनकी शक्ल-सूरत तो अनेकों बार ऐसी होती है कि माँ को भी पहचानना मुश्किल हो जाता है परन्तु जैसे-जैसे बच्चे बड़े होते हैं, उनके स्वभाव, बोलने का ढंग, व्यवहार आदि एक-दूसरे से सर्वथा भिन्न होते हैं। इसी प्रकार करोड़ों-अरबों लोग हैं इस दुनिया में, फिर भी दो व्यक्ति एक-जैसे आज तक न हुए हैं और शायद आगे भी ऐसा होना असंभव ही प्रतीत होता है।

अधिकतर ऐसा भी देखा जाता है कि एक व्यक्ति अपने व्यक्तित्व से पूरी तरह खुश नहीं होता और वह दूसरों की तरह बनने की कोशिश करता रहता है। इस तरह वह अपने आपको दूसरों की अपेक्षा छोटा या हीन समझने लगता है। फिर वह बिना सोचे-समझे दूसरे व्यक्ति की नकल करना शुरू कर देता है क्योंकि उसकी नज़र में दूसरा व्यक्ति अधिक महत्व रखता है।

यहाँ बड़े आश्चर्य की बात यह भी है कि वह व्यक्ति जो दूसरे की तरह बनना चाह रहा है, वह यह नहीं जानता, कि वह जिसकी तरह बनना चाह रहा है, वह दूसरा व्यक्ति स्वयं अपने से सन्तुष्ट नहीं है और वह किसी अन्य की ओर आकर्षित हो रहा है। अतः वह किसी अन्य की तरह अपने व्यक्तित्व को बनाए रखने की कोशिश में जुट चुका होता है। इस प्रकार यह सिलसिला कड़ी-दर-कड़ी जुड़ता ही चला जाता है। इस तरह यह स्पष्ट है कि कोई भी व्यक्ति स्वयं से सन्तुष्ट नहीं है।

यहाँ सोचने की बात यह है कि हम दूसरे की तरह क्यों बनना चाह रहे हैं? हम दूसरों की नकल क्यों करने पर मजबूर होते जा रहे हैं? इसका केवल इतना सा ही कारण है कि हमारा ध्यान अपने पर कम है और दूसरों की ओर अधिक। जो विद्यार्थी अपने शिक्षक की बात को ध्यान से सुनकर उस पर अमल करता है और जो इस तरफ कोई गौर नहीं करता कि अन्य विद्यार्थी तो ध्यान नहीं दे रहे, वे आपस में बातचीत कर रहे हैं आदि, तो वह विद्यार्थी अपने उद्देश्य को पूर्ण कर लेगा और सफलता भी प्राप्त कर लेगा। इस प्रकार जो विद्यार्थी या व्यक्ति अपने कार्य के प्रति पूरी मेहनत, लगन, निष्ठा और एकाग्रता से लगातार कार्यरत रहता है, अपने कार्य को पूरी प्रतिबद्धता से करता है वह हमेशा स्वयं से भी सन्तुष्ट ही रहेगा क्योंकि कहा भी गया है कि 'कर्म ही पूजा है।' जो विद्यार्थी पढ़ाई अथवा अपने कार्य को पूजा की तरह करेगा, वह सन्तुष्ट तो होगा ही, प्रसन्न भी होगा, उसके आत्मबल में बढ़ोतरी भी होगी और उसके फल को प्रसाद की तरह ग्रहण भी करेगा।

हमें केवल अपने जैसा ही बनना है क्योंकि जो मैं हूँ, जैसा हूँ, वैसा दुनिया में वैसे भी कभी कोई और हो ही नहीं सकता। अतः मुझे अपने पर गर्व होना चाहिए कि करोड़ों-अरबों की दुनिया में मेरे जैसा केवल मैं ही हूँ।

– विमलेश आहूजा

हमारे पवित्र ग्रंथ :

सम्पूर्ण अवतार बाणी

पद संख्या 256

कन्नां बाझों सभ दी सुणदा हत्थां बाझों कार करे।
बिन लत्तां दे तुरदा फिरदा पिंगला पर्वत पार करे।
बिनां नक दे लए वासना बिन जीभा राग सुणांदा ए।
बिन अक्खों एह सभ कुझ वेखे पेट बिना एह खांदा ए।
रूप बिना एह बहुरूपिया कई रूपां विच आंदा ए।
कहे अवतार अलख दी लखता सत्गुरु सिर्फ करांदा ए।

भावार्थ : उपरोक्त पद में बाबा अवतार सिंह जी बता रहे हैं कि परमात्मा अलख-अगोचर है जो सामान्य दृष्टि से नजर नहीं आता है। यह प्रभु सब जगह व्याप्त है। यह निराकार है, इसका कोई आकार नहीं है। इसके कान नहीं हैं परन्तु बिना कानों के यह सबकी सुनता है। इसके हाथ नहीं हैं पर बिना हाथों के सारे कार्य करता है। इसके पैर नहीं हैं पर बिना पैरों के यह चलता-फिरता है। इसकी कृपा से अपंग व्यक्ति भी ऊँचे-ऊँचे पर्वतों को पार कर सकता है। यह हर तरफ फैला हुआ है। कोई भी ऐसा स्थान नहीं है जहाँ यह नहीं है। सबमें समाया हुआ यह प्रभु सर्वव्यापी है। यह बिना नाक के सब कुछ सूंघ रहा है, हर पदार्थ की सुगन्धि ले रहा है। इस परमपिता-परमात्मा के मुख में जिह्वा नहीं है पर यह सुन्दर राग सुनाता है। सारी राग-रागनियां इससे ही उत्पन्न हुई हैं। इसकी महिमा अति विशिष्ट है जो इन्सानों को आश्चर्यचकित करती है।

परमात्मा एक है और यही हर एक में समाया हुआ है। इस संसार के सभी इन्सान इसके ही रूप हैं। तेरा रूप है यह संसार का भाव यही है कि यह संसार के हर इन्सान में विराजमान है। अपने सर्वव्यापी स्वरूप के कारण यह सब कुछ करते हुए भी कुछ नहीं करता, यह अकर्ता है।

बाबा अवतार सिंह जी बता रहे हैं कि यह घट-घट वासी परमात्मा बिना आँखों के सब कुछ देखता है। पेट नहीं होते हुए भी यह सब कुछ खाता है। इसका कोई रूप रंग नहीं है पर सारे रूप, सभी रंग इसके हैं। यह धरती, यह सुन्दर कायनात इसने ही बनाई है और अनेक रूप धारण करके अपनी बनायी प्रकृति में आता है। इसको साधारण आँखों से देखा नहीं जा सकता। इस अलख-अगोचर की लखता केवल सत्गुरु कराता है।

बाबा अवतार सिंह जी ने इसके विभिन्न रूपों के कारण इसे बहुरूपिया कहा जिसे बिना गुरु की कृपा के पहचान पाना असंभव है। बिना हाथ-पैर, आँख, कान, नाक, जिह्वा के भी यह सब कुछ कर सकता है। सबका स्वाद ले रहा है। सत्गुरु की शरण में आकर ऐसे सर्वव्यापी प्रभु को जानना, इसको मानना और इसका होकर जीवन जीना ही मानव का जीवन लक्ष्य है।

भावार्थ : हरजीत निषाद

अनमोल वचन

❖ सेवा, सिमरन और सत्संग का हम हमेशा जिक्र करते हैं। हो सकता है किसी को लगे कि इन्हीं तीन कर्मों का निरंतर जिक्र होता रहता है। पर ये विषय नीरस न होकर बहुत अहम और लाभकारी हैं। हमें इनकी गहराई में जाकर इनके महत्व को समझना होगा। सत्संग केवल भवन तक सीमित नहीं है। हम जब-जब कुछ भी गुरमत अनुसार स्कूल, दफ्तर, घर या अन्य स्थानों में कार्य करते हैं तब-तब मानो हम सत्संग ही कर रहे होते हैं। ब्रह्मज्ञान लेने के बाद जो हमें सेवा, सिमरन और सत्संग के कर्म दिए गए। उसमें भी भाव और नीयत प्रधान है। सेवा अगर दिखाने के भाव से, और बार-बार सामने आकर दिखावा करने की नीयत से की जाती है तो उसका क्या लाभ होगा? ऐसे ही सिमरन केवल रटन हो और मन से निरंकार से नाता न जुड़ा हो तो कोई फायदा नहीं होगा। सत्संग में भी सुनकर कुछ ग्रहण करना और जीवन को सुधारने की नीयत से शामिल होना चाहिए।

❖ जैसे एक ही मिट्टी में अनेक प्रकार के पौधे उगाए जाते हैं। जैसे कांटेदार कैक्टस, फूलों वाले पौधे या फिर फलदार वृक्ष, उसी प्रकार मन तो एक ही है पर इसमें विचार अलग-अलग प्रकार के आते हैं। भाव कैसे हैं ये निर्भर करता है हमारे भाव और नीयत पर।

– सत्गुरु माता सुदीक्षा जी महाराज

❖ जो व्यक्ति सत्य के साथ कर्त्तव्य परायणता में लीन है, उसके मार्ग में बाधक होना कोई सरल कार्य नहीं है।

– रवीन्द्रनाथ टैगोर

❖ विजय उसकी होती है जो विजयी होने का साहस रखता है। – जवाहरलाल नेहरु

❖ वही बात बोलनी चाहिए जिससे अपने को भी दुख न पहुँचे। – भगवान बुद्ध

❖ मनुष्य का आचरण ही बताता है कि वह कुलीन है, अकुलीन, वीर है या कायर, पवित्र है या अपवित्र।

– वाल्मीकि रामायण

❖ एक मात्र ईश्वर ही विश्व का पथ-प्रदर्शक और गुरु है। – रामकृष्ण परमहंस

❖ देकर भूल जाओ किन्तु लेकर कभी न भूलो। – सेनेका

❖ जब कभी मुझे ऐब (अवगुण) देखने की इच्छा होती हे तो मैं अपने से आरम्भ करता हूँ और इससे आगे बढ़ नहीं पाता।

– डेविड ग्रेसन

❖ क्रोध एक प्रकार का खरपतवार है। घृणा एक पेड़ है। – संत अगस्तम

-संकलन : श्रीराम प्रजापति

कविता : घमण्डीलाल अग्रवाल

इन्द्रधनुष कैसे बन जाता?

वर्षा के रूकते ही मम्मी–
इन्द्रधनुष कैसे बन जाता?

रंग सभी हैं न्यारे-न्यारे,
मन को लगते प्यारे-प्यारे।
समझ नहीं आता है लेकिन–
कौन इन्हें आखिर बिखराता?

कारण इसका मुझे बताओ,
शंका सारी दूर भगाओ।
बार-बार मेरे दिमाग को–
प्रश्न यही रह रह भरमाता।।

सुन मुन्ने की बातें भोली,
सोच समझकर मम्मी बोली।
रहें वायु के अन्दर जलकण–
जिनसे यह सम्भव हो पाता।।

वर्षा थमती, सूर्य चमकता,
बूंदों पर प्रकाश जो पड़ता।
सात रंग होते विक्षेपित–
यह ही इन्द्रधनुष कहलाता।।

समझ गये क्या प्यारे मुन्ने,
बात जान ली होगी तुमने।
तुम भी इन्द्रधनुष जैसे बन–
जोड़ो सबसे अपना नाता।।

आलेख : कमल सोगानी

कहाँ से आता है मानसून?

साथियों! यह बात तो तुम अच्छी तरह जानते ही हो कि अच्छी बरसात के लिए अच्छे मानसून का उठना जरूरी है।

मानसून वे मौसमी पवनें हैं जिनकी दिशा एक वर्ष के सफर में दो बार परिवर्तित होती हैं। ये पवनें ग्रीष्म में महासागरों से महाद्वीप तथा शीत मौसम में महाद्वीपों से महासागरों की ओर प्रवाहित होती हैं।

ग्रीष्मकाल में सूर्य की उत्तरायण स्थिति के कारण पश्चिमोत्तर भारत में स्थाई तापीय निम्न वायुभार स्थापित हो जाता है तथा ऑस्ट्रेलिया के पास हिन्द महासागर में उच्च वायुभार रहता है। हवाएं ऑस्ट्रेलिया के पास से चलना प्रारम्भ होती हैं और कोरियालिस बल के प्रभाव से भूमध्य रेखा को पार करते समय अपनी दिशा में दाहिने मुड़कर प्रवाहित होती हैं।

ये मानसूनी हवाएं हमारे देश के दक्षिणी भाग की बनावट में विभाजित होकर पूर्वी तथा पश्चिमी भागों से भारत में प्रवेश कर वर्षा करती हैं। इन दो शाखाओं में बंगाल की खाड़ी की शाखा और अरब सागर की शाखा शामिल है।

वर्तमान में मानसून की विविध यात्राओं पर 17वीं सदी में फ्रेंच यात्री सर 'बोर्नियर टेम' ने मेघों के रहस्यमय कार्यकलाप का सूक्ष्मता से अध्ययन किया था। बोर्नियर के अनुसार मानसून विभिन्न दिशाओं से आते हैं और उनकी सघनता उनकी दिशा पर निर्भर करती है। मानसून रास्ते में बड़े-बड़े पर्वतों के रोक लेने से रास्ता बदल लेते हैं और अधिक सघन वातावरण वाले क्षेत्रों में प्रवेश कर बरसने लगते हैं।

बरसात में कई बार काले मतवाले मेघों को निहारने से ऐसा प्रतीत होता है कि उनसे बर्फ या पानी की वर्षा हो रही है, लेकिन उनकी वर्षा का आभास जमीन तक नहीं होता। ऐसा इसलिए होता है कि बीच की गर्म हवा के कारण पानी वाष्प बन जाता है या जमीन तक पहुँचते-पहुँचते पानी की बूंदें छोटी होने से हवा में विलीन हो जाती हैं।

प्रेरक-प्रसंग : महेन्द्र सिंह शेखावत

पूजनीय कौन?

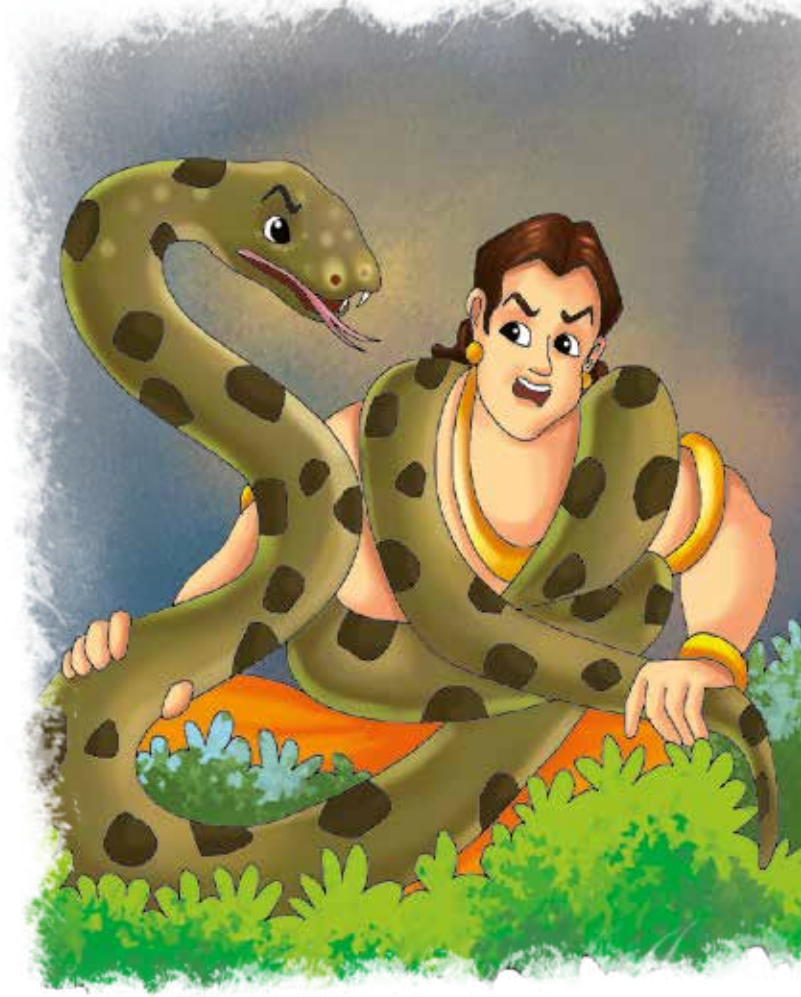

बात उस समय की है, जब पांडव द्वैतवन में रहा करते थे।

एक दिन भीम अपनी गदा लिए जंगल में घूम रहा था। घूमता-घूमता वह एक गुफा के पास पहुँचा जहाँ एक विशाल अजगर पड़ा हुआ था।

भीम को देखते ही अजगर उस पर टूट पड़ा। काफी देर तक दोनों संघर्ष करते रहे। अन्त में जब भीम हारने लगा तो वह पूछ बैठा– हे सर्पराज! तुम कौन हो? आज तक मैं किसी से नहीं हारा किन्तु तुमने मुझे अपने चंगुल में फंसा लिया हैं तुम अवश्य ही कोई असाधारण जीव हो।

यह सुनकर अजगर बोला– मैं तुम्हारा पूर्वज नहुष हूँ किन्तु मैं तुम्हें नहीं छोड़ूंगा क्योंकि मैं विशेष शाप के कारण अजगर बना हूँ।

उसी समय भीम को खोजते-खोजते युधिष्ठिर वहाँ आ पहुँचे। युधिष्ठिर ने तत्काल अपने भाई भीम को मुक्त करने के लिए अजगर से विनम्र निवेदन किया।

तब अजगर युधिष्ठिर से बोला– तुम्हें अपने भाई को मुक्त कराने के लिए मेरे प्रश्न का सही-सही उत्तर देना होगा अन्यथा तुम्हारे भाई के साथ-साथ तुम्हारा भी विनाश होगा। यदि तुम मेरे प्रश्न का सही-सही उत्तर दे सके तो मेरा उद्धार हो जाएगा और तुम्हारा भाई मेरे चंगुल से मुक्त हो जायेगा।

जब युधिष्ठिर इसके लिए सहमत हो गया तो अजगर ने पूछा– यदि शूद्र कुल में पैदा हुआ मनुष्य उत्तम गुणों से युक्त हो तो क्या वह पूजनीय होगा?

युधिष्ठिर बोले– कोई भी मनुष्य जन्म से नीचा या ऊँचा नहीं होता। अपने कर्म-व्यवहार, आचरण और गुणों से ही वह उत्तम या नीच कहलाता है।

युधिष्ठिर ने आगे कहा– वास्तव में उत्तम गुणों वाला व्यक्ति कोई भी हो वह पूजनीय ही होगा।

युधिष्ठिर का उत्तर सुनते ही अजगर शापमुक्त हो गया और भीम को उसके चंगुल से छुटकारा मिल गया।

मगर और मछली

होशियारपुर गाँव के पास एक नदी थी। उसमें एक मछली रहती थी। उसका नाम मीना था। वह बहुत होशियार व चंचल थी। उस नदी में एक मगर आ गया। वह मछलियों को मारकर खाने लगा।

यह देखकर मीना की माँ ने कहा, ''मीना! तुम मगर से होशियार रहना। वह बहुत दुष्ट है।''

दुष्ट मगर वहीं बैठा था। उसे मीना बहुत अच्छी लगी। उसने सोचा, यह बहुत प्यारी मछली है। यदि इसे मारकर खा लिया जाए तो यह बहुत स्वादिष्ट लगेगी। यह सोचकर दुष्ट उसके पीछे पड़ गया।

मीना सतर्क थी। जब उसने मगर को अपने पीछे आते देखा तो भागी। वह घबरा गई थी। फिर उसने सोचा कि घबराने से काम नहीं चलेगा। उसे हिम्मत से काम लेना होगा। यह सोचकर उसने अपने दिमाग को शांत किया।

''ठीक है माँ,'' मीना ने कहा और वह नदी की लहरों से खेलने चली गई।

तब उसे याद आया कि वही पास में नदी में एक चट्टान के नीचे गुफा है। उसी की तरफ दौड़ लगाई जाए। वह तेजी से उस ओर भागी। मगर, उसके पीछे हो लिया।

अब आगे-आगे मीना तैर रही थी, पीछे-पीछे मगर। मीना छोटी थी। वह तेजी से तैर नहीं पा रही थी। मगर, उसके पास तेजी से आ गया।

तभी मीना पलटी। वह दो चट्टानों के पास से गुजरी। उसे चट्टानों के बीच संकरी दरार दिखाई दी।

गुफा पास ही थी। उसे शरारत सूझी। उसने मगर को छेड़ा, ''क्यों मामा! तैरना नहीं आता है या मुझे मारकर खाने की इच्छा नहीं है।''

मगर, यह सुनकर चौंका। मछली की इतनी हिम्मत। वह चुनौती दे। इसलिए वह उसके पीछे तेजी से भागा। अब मीना बहुत पास थी। वह चिल्लाई, ''पकड़ो मामा।''

मगर ने अपना मुँह बढ़ाया परन्तु यह क्या? मगर दो चट्टानों के बीच फंस गया था।

''डर गए मामा जी!'' मीना ने मगर को चिढ़ाया, ''क्या सारी ताकत खत्म हो गई है?''

मगर को गुस्सा आ गया। वह तेजी से हाथ-पैर से जोर लगाकर आगे बढ़ा। वह जितना आगे बढ़ता गया उतना चट्टानों के बीच फंसता चला गया। जब वह निकल नहीं पाया तब उसके समझ में आया कि एक छोटी-सी समझदार मछली ने उसे चट्टानों के बीच फंसा दिया था।

मगर उस चट्टानों के बीच फंसा हुआ भूख से मर गया।

इस तरह समझदार मीना ने दुष्ट मगर से छुटकारा पा लिया।

चित्रकथा

चित्रांकन एवं लेखन : अजय कालड़ा

खिलौने ले लो, सुन्दर खिलौने। हाथी, घोड़ा, मोर, बंदर, मुर्गा, बकरी, गाय तरह-तरह के खिलौने ले लो।
अंकल, मुझे हाथी चाहिए।
अंकल, मुझे चिड़िया दे दो।

देखो पिता जी, मैंने आज चिड़िया बनाई।
अरे वाह! ये तो बहुत ही सुन्दर है।

कुछ दिनों के बाद सुन्दरलाल बीमार हो गया।
पिता जी, आप चिन्ता न करें। आपके बनाये खिलौने मैं बेचूँगा और नये खिलौने भी बना लूँगा।
बहुत अच्छा बेटा।

अब मुझे खूब मेहनत करनी पड़ेगी।
शाबाश बेटा! बहुत अच्छा कर रहे हो।
पिता जी, आप मुझे बताते जाइए, मैं खिलौने बनाकर बेचा करूँगा।
खिलौने ले लो। प्यारे-प्यारे, सुन्दर-सुन्दर खिलौने। आओ बच्चों खिलौने ले लो।
ऐसे ही मुन्ना ने खिलौने बनाकर बाज़ार में बेचे और अपने पिता जी का इलाज कराया।

कुछ दिनों बाद मुन्ना के पिता जी स्वस्थ हो गए।

अब मुन्ना और उसके पिता जी साथ मिलकर खिलौने बनाते और बेचते।

दिन बीतते गए। मुन्ना और सुंदर की मेहनत रंग लाई। सुंदर ने अब एक नया घर ले लिया और गाँव के बाज़ार में खिलौनों की एक दुकान खोल ली।
बेटा, ये सब तुम्हारी मेहनत का फल है।
नहीं पिता जी! यह सब आपकी शिक्षा का कमाल है।

आलेख : विभा वर्मा

विशालकाय हिप्पो

हिप्पो बड़ा ही विचित्र जीव है। इसका शरीर बहुत मोटा-ताजा और शक्ल सुअर से मिलती-जुलती होती है। साधारण हिप्पो 15 फुट तक लम्बा होता है। इसकी खाल लगभग दो इंच मोटी होती है और कोई नुकीला हथियार भी उसे आसानी से पार नहीं कर सकता। इसे दरियाई घोड़ा भी कहते हैं। इसका मुँह बड़ा ही डरावना और बड़ा होता है। जब वह मुँह खोलता है तो उसके भीतर उसकी लम्बी-चौड़ी जीभ और नुकीले दाँत दिखायी देते हैं। इसके मुँह में हाथी के दाँत जैसे दो नुकीले दाँत भी होते हैं।

यह अधिकतर घास और पत्ते खाता है। इसे मीठा बहुत पसन्द है। अत: यह गन्ना बहुत चाव से खाता है। रात के समय जंगलों से निकलकर खेतों में आ जाता है और वहाँ छककर गन्ने खाता है। साथ ही फसल को नष्ट भी कर देता है।

यह दक्षिणी और केन्द्रीय अफ्रीकी जंगलों तथा नदियों में पाया जाता है। यह अपना अधिकांश समय पानी में ही व्यतीत करता है। यह नदियों तथा झीलों में बड़ी तेजी से तैर सकता है। जब कोई छोटी नाव नदी में जा रही होती है तो वह पानी के अन्दर ही अन्दर उसके पास पहुँच जाता है और अचानक ही उसे पलट देता है। जब यह पानी में लेटता या बैठता है तो इसकी छोटी-छोटी आँखें, कान, नाक पानी से बाहर रह जाती हैं। इसकी नाक इसके मुँह पर ऊपर की ओर उठी होती है ताकि वह आसानी से पानी के ऊपर रह सके। जब वह पानी के भीतर तैरता है तो वह अपनी आँखें और कान दोनों बन्द कर लेता है। यह बहुत ही सीधा जानवर है। यह अक्सर नदी के किनारे दलदल में रहना पसन्द करता है। भूख लगने पर मैदान में आकर भोजन की खोज करता है।

अफ्रीकावासी हिप्पो की नाव भी बनाते हैं और उस पर बैठ कर मजे से नदी में सैर करते हैं। वहाँ के लोग नदी में ही हिप्पो को मार डालते हैं। पहले तो उसका भारी शरीर नदी की तलहटी में बैठ जाता है फिर बाद में पानी की सतह पर आ जाता है। इसी पर बैठकर यहाँ के लोग एक स्थान से दूसरे स्थान को जाते हैं।

कविता : डॉ. ब्रजनन्दन वर्मा

धरती का श्रृंगार है

पेड़

आओ मिलकर बाग लगायें,
सुन्दर नये लगायें पेड़।
तेज धूप सदा सहता है,
सबको छाया देता पेड़।।

जाड़ा गरमी बरसातों में,
नहीं तनिक अकुलाता पेड़।
पथिकों को ये छाया देकर,
अपने पास बुलाता पेड़।।

आम आंवला जामुन कटहल,
रोपो मधुर फलों के पेड़।
औषधि जड़ी-बूटियों वाली,
देता रहता है हरदम पेड़।।

तरह-तरह के फल देता है,
मुझको स्वस्थ बनाता पेड़।
सबको ऑक्सीजन देता है,
कार्बन खुद पी लेता पेड़।।

नीम-आंवला-पीपल पाकर,
रस की धार बहाता पेड़।
शीतल हवा हमें देता है,
धरती का श्रृंगार है पेड़।।

बाल कविता : गोविन्द भारद्वाज

नन्हा पौधा

नन्हा पौधा बनकर पेड़,
देता है हरियाली ढेर।

फल-फूल नित हमको बांटे,
रोग-दोष सब यही छांटे।

आम-पीपल-नीम हो बेर,
देता है हरियाली ढेर।

छांव इनकी मिले भरपूर,
कभी न हों ये हम से दूर।

पौधे लगाओ न हो देर,
देता है हरियाली ढेर।

कोमल पत्ते नरम डाली,
राग सुनाती पीहू काली।

मत करो कभी इनसे छेड़,
देता है हरियाली ढेर।

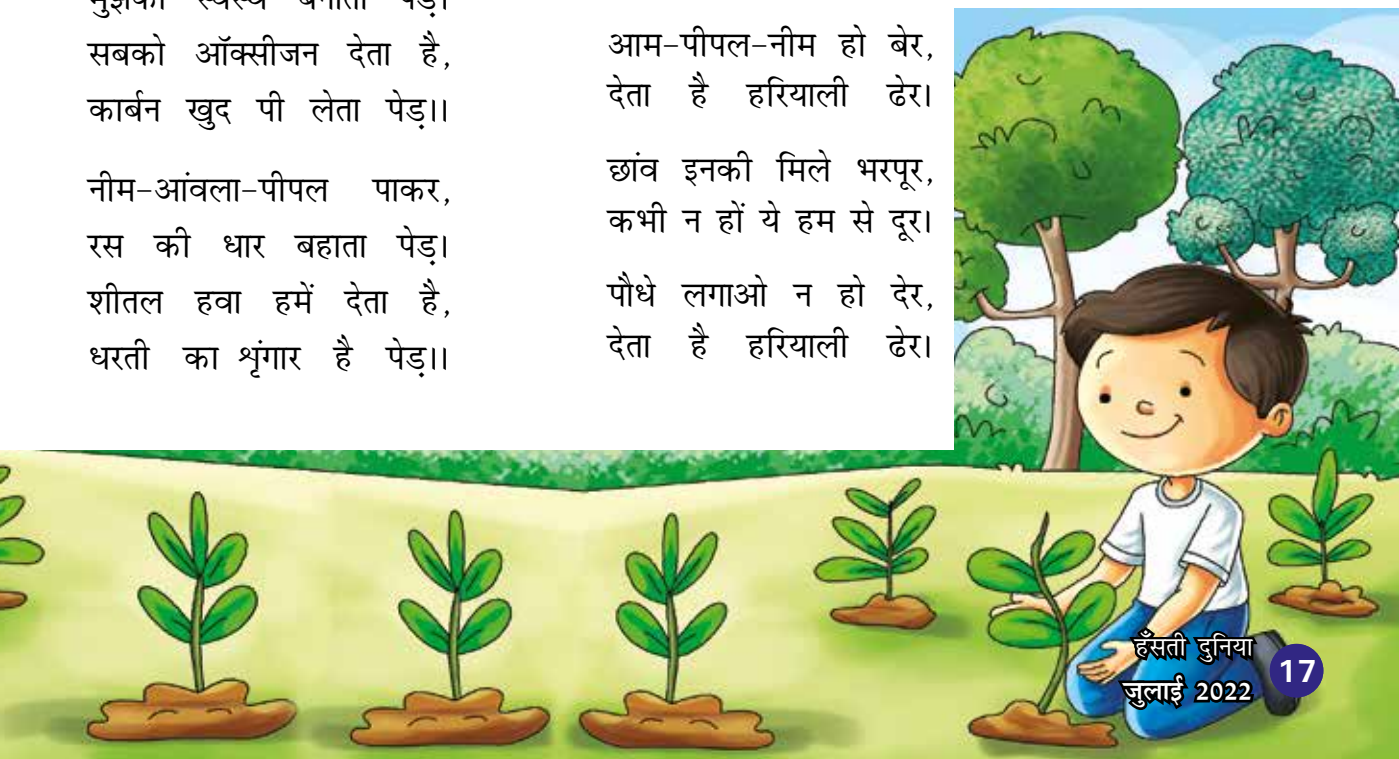

साहूकार की हँसी

एक बुजुर्ग राहगीर कहीं जा रहा था। शाम ढल चुकी थी और आकाश में बादल गहरे होते जा रहे थे। आखिर वर्षा होने लगी। राहगीर को सिर छिपाने के लिए कोई जगह नजर नहीं आयी तो वह भीगता हुआ एक गाँव पहुँचा। वहाँ उसने एक घर के दरवाजे पर दस्तक दी।

वह गाँव के साहूकार का घर था। दरवाजा खुला, तो साहूकार ने राहगीर से झल्लाकर पूछा– क्या चाहिए?

राहगीर ने कहा– बारिश में मैं आगे नहीं जा सकता। ऊपर से अंधेरा भी हो गया है। रात बिताने को जगह मिल सकेगी?

–यह कोई सराय है?– साहूकार ने कहा। चलते बनो यहाँ से। क्या पता, कौन हो तुम? कहीं चोर-उचक्के...।

राहगीर कुछ क्षण सकपकाया-सा वहाँ खड़ा रहा। फिर, उसने कुछ आगे जाकर एक और घर के दरवाजे पर दस्तक दी।

दरवाजा खुला, तो एक किसान ने उसे कुछ क्षण हैरानी से देखा और इसके पहले कि राहगीर कुछ कहता, वह बोला– तुम तो बुरी तरह भीग गये हो। अन्दर आओ न।– तब उसने उसे कपड़े लाकर दिये। ''लो, पहले जल्दी से यह कपड़े बदल लो, फिर चूल्हे के पास बैठकर आग तापना। कहीं सर्दी न लग जाये। उसके बाद खाना खायेंगे। मैं खाने ही वाला था।''

उस रूखे-सूखे खाने और घर की हालत को देखकर बुजुर्ग राहगीर को किसान की गरीबी पर तरस आया। फिर बातों के दौरान उसे पता लगा कि किसान के पास थोड़ी-सी जमीन है, जिसमें आधी साहूकार के पास गिरवी पड़ी है। बेटी की शादी पर उसने कुछ रुपया उधार लिया था तो उसके बदले में जमीन गिरवी रखनी पड़ी।

सुबह हुई तो वर्षा रूक चुकी थी। राहगीर जाने के लिए तैयार हुआ। किसान का धन्यवाद करके घर से निकलते समय उसने कहा– आज सुबह जो भी करोगे, उसे रात तक करते ही रहोगे।– तभी वह आगे बढ़कर आँखों से ओझल हो गया।

किसान कुछ क्षण वहीं खड़ा उसकी बात के बारे में सोचता रहा। आखिर इसका क्या मतलब है? खैर, अब काम की बात सोचूं। हाँ, आटा खत्म हो चुका है। बोरी में जो थोड़ा-सा गेहूँ पड़ा है, उसे पिसा लाऊँ।

वह बोरी में से गेहूँ निकालकर एक पीपे में डालने लगा। पीपा

लगभग भर गया तो बाहर गिरने लगा। उसे हैरानी हुई। उसने देखा कि बोरी अभी खाली नहीं हुई। उसने बाकी बचे गेहूँ को निकालने के लिए बोरी को उलटे पकड़ा ही रहा। गेहूँ का अब ढेर लगने लगा। किसान उसी प्रकार बोरी को उलटाये आश्चर्यचकित देखता रहा और गेहूँ गिरता रहा। किसान ने दिनभर यही काम किया। किसान का सारा घर गेहूँ से भर गया।

अगले दिन किसान अपने सालभर खाने के लिए गेहूँ रखकर सारा गेहूँ शहर बेच आया। तब उसने साहूकार का कर्ज चुकाया और अपनी जमीन छुड़ायी। अब भी उसके पास काफी पैसे बचे थे। वह बहुत खुश था।

जब गाँववालों को सारे किस्से का पता लगा तो उन्होंने उसके भाग्य को सराहा। पर साहूकार अपने भाग्य को कोसने लगा और वह उसी समय घोड़े पर सवार होकर बूढ़े राहगीर की खोज में निकल पड़ा।

राहगीर से मिलने पर उसने बार-बार माफी मांगी और अपने घर चलने के लिए अनुरोध किया। ''अगर आप न आये, तो मैं समझूंगा कि आपने मुझे दिल से माफ नहीं किया है।'' उसने उसके पांव पकड़कर कहा। आखिर उसे मनाकर ही रहा। घर लाकर उसने उसकी खूब आवभगत की, मानो उस पर अपना सारा घर ही लुटा देना चाहता है।

बूढ़ा राहगीर अगले दिन नहीं गया, तो साहूकार ने उसकी और भी ज्यादा सेवा की। पर जब वह अगले दिन भी नहीं गया तो साहूकार को चिन्ता हुई कि कहीं वह यहीं न टिक जाये। इस प्रकार कई दिन बीत गये। साहूकार मन ही मन खीझने लगा।

आखिर एक दिन सुबह राहगीर जाने को तैयार हुआ तो साहूकार ने चैन की सांस ली। राहगीर ने उसका धन्यवाद करके विदा लेते हुए कहा– आज सुबह जो भी करोगे, रात तक करते

ही रहोगे।– और वह बूढ़ा राहगीर चला गया।

साहूकार शुरू से ही सोचे हुए था कि उसे क्या करना है। तब उसके मन में कहा– बूढ़ा दफा हो गया है, तो अब तिजोरी खोलकर उसमें से रुपये निकालने शुरू करता हूँ। रात तक सारा घर रुपयों से भर जायेगा। तब मैं खुशी से इतना हँसूगा कि उस बूढ़े खुर्राट के कारण पैदा हुई सारी तलखी भुला दूँगा। खूब दिल खोलकर हँसूगा। हा... हा... हा...।

वह हँसता हुआ तिजोरी वाले कमरे में दाखिल हुआ। वह बेतहाशा हँसे जा रहा था। तिजोरी खोलते समय वह अपने आपको सम्भाल नहीं पा रहा था। फिर तो वह अपने पेट को पकड़कर और जोर-जोर से हँसने लगा। उसकी हँसी एक क्षण के लिए भी रूक नहीं रही थी। आखिर वह फर्श पर गिरकर हँसता हुआ लोट-पोट होने लगा। अब उसकी हँसी की आवाज सारे घर में गूंजने लगी थी। देखते-देखते गाँव के लोग वहाँ जमा होने लगे।

लोगों में से किसी ने कहा– कहीं यह खुशी में पागल तो नहीं हो गया है?

–सचमुच यह तो बिल्कुल ही पागलों की तरह हँस रहा है।– गाँव के मुखिया ने कहा– कहीं किसी को काट ही न खाये। इसे पागलखाने पहुँचा दो।

साहूकार ने यह सब सुना तो भयभीत हो उठा। पर उसके लिए यह सम्भव नहीं था कि अपनी हँसी रोककर लोगों से कहता कि वह पागल नहीं है।

तभी बहुत से लोगों ने उसे पकड़ लिया और रस्से से बांधने लगे। साहूकार ने बहुत हाथ-पांव मारे, पर छूट न सका। उसे बुरी तरह बांध दिया गया था। उस हालत में वह बड़ी दयनीय लग रहा था पर उसकी हँसी ऐसी थी कि लोगों को उससे डर लग रहा था। उन्होंने उसे बैलगाड़ी में लादा और शहर ले जाकर पागलखाने पहुँचा दिया। बेचारा साहूकार।

आलेख : परशुराम शुक्ल

एक विलक्षण वन्य जीव रैकून

रैकून एक अत्यन्त तेज तथा चालाक वन्य प्राणी है। इसकी दो मुख्य जातियां पायी जाती हैं– उत्तरी रैकून तथा दक्षिणी रैकून। उत्तरी रैकून कनाडा तथा मध्य अमेरिका में पाया जाता है तथा दक्षिणी रैकून केवल दक्षिणी अमेरिका में पाया जाता है।

रैकून एक स्तनपायी जीव है। यह प्रोसाइओनाइडी परिवारा का सदस्य है। सामान्यतया यह भूरा या कत्थईपन लिये हुए पीले रंग का होता है। इसकी लम्बाई ढाई फीट से लेकर तीन फीट तथा वजन आठ नौ किलोग्राम तक होता है। रैकून की पूँछ लगभग पच्चीस सेंटीमीटर लम्बी, बालदार तथा बड़ी सुन्दर होती है। इसका रंग गहरा कत्थई होता है तथा इस पर छह-सात काले रंग के छल्ले होते हैं जिनसे इसकी पूँछ की सुन्दरता और बढ़ जाती है।

रैकून घने जंगलों में पानी के निकट वाले भागों में रहना अधिक पसन्द करता है। इसका मुख्य भोजन विभिन्न प्रकार की मछलियां, मेढक, झींगा तथा कीड़े-मकोड़े हैं। यह कच्चा अनाज भी खाता है।

उत्तरी रैकूनों का प्रजनन साल में सिर्फ एक बार होता है; जनवरी से जून तक। मादा रैकून एक से आठ तक बच्चों को जन्म देती है तथा यही बच्चों का पालन-पोषण करती है। रैकून परिवार अपने घर भी बदलते रहते हैं। यदि कोई रैकून अपना घर बदलता है तो मादा रैकून अपने बच्चों को एक-एक करके नये घर पहुँचाती है।

इस जिज्ञासु जन्तु का शिकार सुन्दर फर तथा मांस के लिए किया जाता है। शिकारी इसको बड़ी चालाकी से पकड़ते है। क्योंकि रैकून आसानी से पकड़ में नहीं आता। इसका शिकार करने के लिए शिकारी जानवर को पकड़ने वाले फन्दे को तरह-तरह की रंग-बिरंगी झालरों से सजा देते हैं तथा फन्दे को जंगल में रख देते हैं। रैकून जिज्ञासु होने के कारण इस रंग-बिरंगे फन्दे को देखने उसके पास आ जाता है और उसमें फंस जाता है।

उत्तरी अमेरिका के आदिवासी तथा कृषक रैकून के बालों को देखकर मौसम का अनुमान लगा लेते हैं। उनका विश्वास है कि यदि इसके बाल लम्बे हों तो सर्दी अधिक पड़ती है और यदि बाल छोटे हों तो सर्दी कम पड़ती है।

रैकून अपना भोजन हमेशा पानी में धोकर खाता हे। प्राणीशस्त्रियों ने इस सम्बन्ध में काफी अध्ययन किया है तथा निष्कर्ष निकाला है कि रैकून भोजन साफ करने के लिए नहीं धोते क्योंकि यह अपना भोजन गंदे पानी में भी धो डालते हैं। यह पानी में से पकड़े गये जन्तुओं को भी धोते हैं। इनकी आदतों को देखते हुए यह कहा जा सकता है कि धोने से भोजन अधिक स्वादिष्ट लगता होगा या पानी में भोजन को धोना इनके लिए एक रोचक खेल भी हो सकता है।

आलेख : दीपांशु जैन

ऐसे शुरू हुआ अमराईयों का चलन

पुराने समय की बात है। आमनाथ नामक एक महासिद्ध थे। वे अपनी शिष्यमंडली के साथ इधर-उधर घूमा करते थे। किसी एक जगह काफी समय तक ठहरते नहीं थे। भिक्षा मांगकर खाते और योगाभ्यास करते थे।

एक बार घूमते-घूमते वे सिरमौर राज्य के नाहन नगर में जा पहुँचे। स्नान-ध्यान के बाद उन्होंने अपने एक शिष्य को आदेश दिया कि वह राजा के यहाँ से भिक्षा मांग लाये। साथ ही शिष्य को उन्होंने विशेष रूप से यह भी समझाया कि वह भोजन सामग्री के साथ आम का अचार लाना न भूले।

राजमहल में पहुँचकर शिष्य ने आवाज लगाई। राजभंडारी बाहर आया। साधु को दरवाजे पर आया देखकर उसने प्रणाम किया और उसके बाद उसने उसे पर्याप्त भोजन सामग्री प्रदान की। किन्तु शिष्य ने जब आम के अचार की मांग की तो राजभंडारी ने अपनी असमर्थता प्रकट की।

दरअसल कुछ वर्षों से सिरमौर में आम की फसल अच्छी नहीं हो रही थी। सर्वत्र आम का अकाल पड़ गया। कुछ धनी मानी लोग ही आम का अचार डालने में समर्थ थे क्योंकि दूर-दराज से महंगे आम मंगाने की हैसियत सिर्फ उन्हीं की थी।

आम के अचार को लेकर राजभंडारी और शिष्य की बात अभी चल ही रही थी कि उधर से राजा आ निकले। जब उन्हें पता चला कि इन दिनों राजधानी में महासिद्ध आमनाथ जी अपने शिष्यों समेत ठहरे हुए हैं और भोजन के साथ आम का अचार चाहते हैं तो उन्होंने राजभंडारी को संकेत दिया कि साधुओं की इच्छा पूरी कर दी जाये। शिष्य, भोजन सामग्री के साथ आम का अचार लेकर पहुँचा। गुरु आमनाथ जी बहुत खुश हुए। सबने मिलकर प्रेम से भोजन किया। उस दिन से आम का अचार भिक्षा का एक अनिवार्य अंग बन गया।

इसी तरह चार दिन बीत गये। पांचवे दिन शिष्य जब भिक्षा के लिए पहुँचा तो राजभंडारी ने आम का अचार देने से मना कर दिया। शिष्य को यह अच्छा नहीं लगा। फिर भी वह विनम्र भाव से आम के अचार के लिए आग्रह करता रहा। राजभंडारी ने इस बार भी मना कर दिया।

बात राजा के कानों तक पहुँची। राजा तत्काल वहाँ आ पहुँचे और शिष्य को धमकाते हुए बोले कि अपने गुरु से जाकर कहना कि रोज-रोज आम का अचार नहीं मिलेगा। आम का अचार यदि इनता ही अच्छा लगता है तो क्यों नहीं कहीं अमराई लगाकर बैठ जाते? निठल्ले घूमते रहने से क्या फायदा?

शिष्य को राजा की बात बुरी तो लगी मगर उसने कुछ कहा नहीं और अपने डेरे पर लौट आया। भोजन के समय जब आम का अचार नहीं

मिला तो गुरु ने शिष्य से इसका कारण पूछा। इस पर शिष्य ने राजा की नाराजगी साफ-साफ शब्दों में बता दी। सुनकर क्षणभर के लिए योगी आमनाथ जी भौचक्के रह गये। फिर वे यह सोचकर सन्तुष्ट हुए कि राजा ठीक ही कहते हैं। निठल्ले रहकर किसी इच्छा की पूर्ति नहीं की जा सकती।

गुरु ने उस दिन ये यह नियम बना लिया कि अब वे किसी एक जगह अधिक समय तक ठहरेंगे तो नहीं, मगर जहाँ-जहाँ भी जायेंगे, वहाँ-वहाँ आम के अधिक से अधिक पेड़ जरूर लगायेंगे।

कहा जाता है भारत में अमराईयों का चलन तभी से चला आ रहा है।

बच्चों के अपनाने योग्य बातें

- अच्छे नागरिक बनना।
- व्यवहारिक जीवन में सुधार लाना।
- हर एक के दु:ख-दर्द में काम आना।
- माता-पिता की आज्ञा का पालन करते हुए उनकी सेवा करना।
- माता-पिता की कमाई के मुताबिक खर्च करना।
- मानव मात्र से प्यार करना।

सैकरीन का आविष्कार

गर्मी का महीना था। संध्या की वेला थी। आकाश साफ था। अध्यापक विजय सेन ने सेठ जी के पुत्रों से कहा– "आज पार्क में हम लोग घूमने चलेंगे।"

"हाँ चलिए," तीनों ने हामी भरी।

अगले ही क्षण वे पार्क में थे। वहाँ पहुँचकर वे खुश हुए। तीनों लड़के पार्क में इधर-उधर उछल-कूद करने लगे।

थोड़ी देर बाद वे पार्क की एक बेंच पर जा बैठे। वहाँ से कुछ ही दूरी पर पार्क के बाहर एक ठेला वाला शर्बत बेच रहा था। सुमन ने शर्बत पीने की इच्छा जाहिर की। शशि और सन्तोष भी पीछे नहीं रहे।

अध्यापक महोदय ने तीनों को शर्बत पीने की इजाजत दे दी। जब वे शर्बत पीकर लौटे तो अध्यापक महोदय ने पूछा– "शर्बत कैसा लगा?"

"मीठा", सभी एक साथ बोले।

"मीठा क्यों था?" अध्यापक महोदय ने सन्तोष से सवाल किया।

"चीनी घुली-मिली थी", उसने जवाब दिया।

"ऐसी बात नहीं है", अध्यापक बोले।

"तो फिर?"

"जल में चीनी की जगह सैकरीन दिया गया है।

"थोड़ा-सा सैकरीन बहुत अधिक जल को मीठा बना देता है।" अध्यापक महोदय ने बताया।

"अजीब बात है", तीनों हैरान थे।

"जानते हो, सैकरीन का आविष्कार कैसे हुआ?" अध्यापक विजय सेन ने तीनों से पूछा।

"हम नहीं जानते हैं, आप ही इसके बारे में बताइए न।" तीनों उत्सुक हो उठे।

"फिर सुनो", वह बोले।

"कहिए", सबकी नजर अध्यापक महोदय के चेहरे पर जा टिकी।

"एक वैज्ञानिक था। अपनी प्रयोगशाला में वह एक बार कोलतार से प्राप्त 'टालुइन' नामक कार्बनिक यौगिक पर कुछ कार्य कर रहा था। इस सिलसिले में उसने उस यौगिक पर कई रसायनों से भी प्रयोग किये।" कहते-कहते अध्यापक महोदय अपनी जगह से उठ खड़े हुए। फिर उन्होंने अपनी बात आगे बढ़ाई, "घंटो प्रयोग वह करता रहा। भोजन का समय हो गया। इसके लिए उसे बुलावा आया। मगर वह अपने प्रयोग में ऐसा खोया रहा कि खाने की तनिक भी सुधि नहीं रही। दूसरी बार बुलाहट हुई। उसने उसे भी टाल दिया। जब कई बार बुलाहट हुई तो लाचार हो उसे अपनी जगह से उठना पड़ा।"

"फिर क्या हुआ?" सुमन ने जानना चाहा।

अध्यापक महोदय ने उसकी जिज्ञासा शान्त करने के लिए आगे कहा– "वह वैज्ञानिक झटपट भोजन कर पुनः अपने प्रयोग में भिड़ जाना चाहता था। इस जल्दबाजी में वह भोजन करने से पहले अपने हाथ को अच्छी तरह धो भी नहीं सका।

जैसे-तैसे भोजन करना उसने शुरू कर दिया।''

''अच्छा तो'', शशि बीच में बोल उठा।

''जानते हो, जब उस वैज्ञानिक ने भोजन का पहला कौर मुँह में डाला तो वह उसे काफी मीठा जान पड़ा। फिर उसने गौर से भोजन-सामग्री की ओर निहारा। उसके अचरज का ठिकाना न रहा क्योंकि उसमें कोई भी ऐसी चीज नहीं थी, जो मीठी हो, मीठी लगे'', इतना कहकर अध्यापक महोदय चुप हो गए।

''ऐसा कैसे हुआ?'' सन्तोष हैरान था। दूसरे भाई भी।

''बताता हूँ,'' अध्यापक महोदय ने रहस्य खोला। उस वैज्ञानिक ने तब केवल अपनी ऊँगलियों को जीभ से चाटना शुरू किया। उसे अपनी ऊँगलियाँ भी मीठी जान पड़ी। नतीजा हुआ कि उसका वैज्ञानिक दिमाग तेजी से क्रियाशील हो उठा। झट उसके दिमाग में एक बात आयी, यह किसी रसायन का असर है।

''तो फिर?'' शशि ने बेसब्री जाहिर की।

''अब उस वैज्ञानिक का ध्यान भोजन से उचट गया। उसने बीच में ही अपना भोजन छोड़ दिया और प्रयोगशाला की ओर जा बढ़ा। वहाँ आकर उसने एक-एक कर प्रत्येक रसायन को चखना शुरू किया, जिसे वह इसके पहले परीक्षण के कार्य में उपयोग में ले रहा था। थोड़ी देर बाद मीठा लगने वाला रसायन उसकी पकड़ में आ गया। पकड़ में आते ही उसकी खुशी का ठिकाना न रहा।'' अध्यापक विजय सेन ने अपनी बात खत्म करते हुए कहा– ''यह संयोग ही था कि इस तरह की एक साधारण-सी घटना से 'सैकरीन' का आविष्कार हुआ। कई चीजों में अब इसका उपयोग किया जा रहा है, हो रहा है। मधुमेह के मरीजों के लिए यह काफी उपयोगी सिद्ध हुआ है।''

''उस वैज्ञानिक का क्या नाम है जिसने 'सैकरीन' का आविष्कार किया?'' तीनों ने एक स्वर से अध्यापक जी से पूछ डाला।

''उसका नाम है– फाहलबर्ग।'' अध्यापक ने बताया और फिर पूछा– ''अब तो सैकरीन के आविष्कार के बारे में तुम सब अच्छी तरह जान गए?''

''बिल्कुल'', तीनों ने कहा। फिर वे सभी घर की तरफ लौट चले।

◆

लेख : गोपाल जी गुप्त

इतिहास चाकलेट और कोकोआ वृक्ष का

आज बाजार में भिन्न-भिन्न प्रकार के सुस्वादु चाकलेट लोगों को लुभाते हुए मौजूद हैं जो न केवल बच्चो को ही बल्कि बड़ों को भी प्रिय हैं। किन्तु इसके जन्म की कथा इससे भी अधिक लुभावनी है। चाकलेट का प्रयोग आज न केवल टॉफी के रूप में ही वरन् अनेक पेय पदार्थों में हो रहा है। कहते हैं कि इसका श्रेय एजटेक वालों को है जो इसके वृक्ष, कोकोआ की फलियों को कूट पीसकर इनमें कई मसाले मिलाकर एक स्वास्थ्यवर्द्धक पेय बना कर ग्रहण करते थे।

इसका मूल स्थान दक्षिणी तथा मध्य अमेरिका है। ईसा पूर्व प्रथम शताब्दी में दक्षिणी मैक्सिको में बहुतायत से कोकोआ वृक्ष उगाए जाते थे और इसे बहुत मूल्यवान वृक्ष माना जाता था। इसकी फलियों के बीज, जिन्हें बीन्स कहा जाता है, से बने पेय पीने का सामर्थ्य केवल धनिकों को था और इसे देवताओं का भी प्रिय माना जाता था। विश्व के मौद्रिक इतिहास से पता चलता है कि इसके बीन्स मौद्रिक इकाई के रूप में वैसे ही मान्य थे जैसे भारत में कौड़िया मान्य थीं। अमेरिका से यह पौधा स्पेन, वहाँ से फ्रांस, यूरोप पहुँचा, जहाँ से इसकी पहुँच श्रीलंका तक हुई और लगभग डेढ़ शताब्दी पूर्व कुछ लोग इसके वृक्ष तथा बीज श्रीलंका से भारत लाये और इसकी उपज नीलगिरी की पहाड़ियों पर हुई। शनैः-शनैः यह केरल, तमिलनाडु, कर्नाटक के खेतों तथा कईयों की गृहवाटिकाओं, फार्म हाउसों में उगाये जाने लगे। इनकी बीन्स से ही चाकलेट एवं अन्य पेय पदार्थ बनाये जाते हैं।

कहा जाता है कि सन् 1519 में स्पेन के प्रसिद्ध अन्वेषक हनीण्डो कोर्टेस मैक्सिको के शासक मोंटेजुआ के दरबार में गये तो उनके समक्ष इस पेय को प्रस्तुत किया गया जिसे पी कर वह आनन्दित हो उठे। उन्हीं के द्वारा स्पेनवासियों को इसकी जानकारी हुई और वहाँ भी कोकोआ वृक्ष की पैदावार होने लगी। सैकड़ों साल तक वे मीठे सुगन्धित पदार्थ, दालचीनी, वनीला आदि मिश्रित कर इसके गर्म सुस्वाद पेय का आनन्द उठाते रहे परन्तु वे इसकी निर्माण प्रक्रिया गोपनीय बनाए रहे। शनैः-शनैः गोपनीयता भंग हुई एवं फ्रांस, यूरोप एवं अन्यान्य पाश्चात्य देशवासियों ने इसका स्वाद चखा। उस समय यह एक महंगे विलासिता युक्त पेय के रूप में लोकप्रिय रहा।

अट्ठारहवीं शताब्दी के छठे सातवें दशक तक बीन्स से सुस्वाद पेय पदार्थ ही बनाये जाते रहे और ये तरल रूप में ही रहे।

इसे ठोस रूप प्रदान किया गया सन् 1765 में, जब अमेरिका में मैसाचुसेट्स (डोरचेस्टर) के निकट मिल्टन लोअर मिल्स ने पहली बार मोल्डिंग तकनीक से ठोस चाकलेट का निर्माण किया। इस पर अनुसंधान होने लगे और सन् 1825 में डचमैन कोमराड वान ह्यूटेन ने पहली बार कोकोआ बटर तैयार किया। जो 97^0 फारनेहाइट के तापमान पर पिघलने/घुलने लगता था। इस तरह से ऐसा ठोस चाकलेट बना जो मुँह में जाकर पिघल जाए।

विश्व में आज कोकोआ का सर्वाधिक उत्पादन घाना में होता है। इसके बाद ब्राजील, नाइजीरिया, फ्रांस, यूरोप आदि आते हैं। आज बीन्स अनेक प्रकार के पेय पदार्थों में प्रयुक्त होता है। बीन्स का सर्वाधिक उपयोग अमेरिका में होता है।

कोकोआ वृक्ष का वानस्पतिक नाम थियोब्रोना काकाओ है। यह स्टटकूलिया प्रजाति का सदाबहार वृक्ष है, जिसकी रूप-रेखा/रचना अनोखी होती है।

इसका पौधा उगने के बाद एक-डेढ़ मीटर तक सीधा बढ़ता है, फिर इसमें 5-6 शाखाएं फूटती हैं जो सीधे ऊपर न जाकर भूमि के समानान्तर बढ़ती हैं। सबसे ऊपर की कली भी शाखा का रूप ले लेती है और आगे की बढ़त एक कल्ले (जिसे सकर कहते हैं) द्वारा होती है। यह कल्ला पौधे के पंख जैसे शिखर के नीचे से फूटता है। कुछ ऊँचा बढ़ने पर इससे भी अगल-बगल में बढ़ने वाली शाखाएं फूटती हैं जो एक प्रकार से कोकोआ वृक्ष की दूसरी मंजिल होती है। शनैः शनैः कुछ ही महीनों में इसकी तीसरी मंजिल भी इसी तरह तैयार हो जाती है। इस वृक्ष की औसत ऊँचाई 10 मीटर होती है। इसकी पत्तियां 20-30 सेंटीमीटर लम्बी, लम्बवत् होती है। शाखाओं में पत्तियों के बगल में ही फूल खिलते हैं जो बाद में फली के रूप में बदल जाते हैं। तीन से चार साल के ही दौरान कोकोआ फलने-फूलने लगता है और 45 साल तक फलता-फूलता है। 50 साल का होते-होते यह फलना-फूलना बंद कर देता है। फूल को फली बनने में लगभग 4-5 महीने लगते हैं और एक वृक्ष में औसतन 80 से 120 तक फूल और फलियां आती हैं।

चाकलेट बनाने के लिए फलियों को वृक्ष से काटकर अन्दर से गूदे सहित बीज निकाल लिये जाते हैं जिन्हें किसी ट्रे या तश्तरी में सूखने के लिए रख दिया जाता है। एक सप्ताह में बीज भूरे रंग के हो जाते हैं। अब गूदे से बीज अलग कर एक निश्चित तापमान पर भट्टियों में सुखाते हैं। सूख गए बीजों को चुन-चुनकर साफ करते हैं और उन्हें लोहे के ड्रम में भूनते हैं। भुन जाने के बाद उन्हें नालीदार रोलर में डाला जाता है जहाँ उनके छिलके अलग होते हैं और बीन्स दाल की तरह दो भागों में हो जाते हैं। फिर उन्हें पीसकर उनका पाउडर बनाया

जाता है जिससे चाकलेट तैयार होता है तथा इसे ही अन्य पेय पदार्थों में भी प्रयुक्त किया जाता है।

वैज्ञानिकों के अनुसार चाकलेट में प्रोटीन, वसा, विटामिन ई, कैलशियम, फॉस्फोरस, आयरन, मैग्नीश्यिम सहित अनेक रसायनिक तत्व होते हैं। चाकलेट से कोई दुष्प्रभाव होता हो तो इसकी जानकारी अभी तक नहीं मिली है किन्तु शोध बताते हैं कि इसके सेवन से एण्डोर्फीन नामक हार्मोन पैदा होता है जो दर्द निवारक होता है तथा प्रसन्नता की अनुभूति कराता है। यह अनेक बीमारियों में भी लाभदायक है। फिर भी इसका अधिक सेवन नहीं करना चाहिए वैसे भी भारतीय मान्यता के अनुसार किसी भी चीज़ का अतिशय उपयोग वर्जित है।

सन्त निरंकारी

ग्यारह भाषाओं में प्रकाशित विशुद्ध आध्यात्मिक मासिक

इस पत्रिका में आप पढ़ सकते हैं:

- सत्गुरु वचनामृत
- तर्कपूर्ण लेख
- काव्य प्रवाह
- गीत माधुर्य
- जीवन दर्शन
- बाल वाटिका
- लोकगीत
- नारी शक्ति
- अमृत कलश
- सुनहरी यादें
- पुराने अंकों से

हिन्दी | पंजाबी | अंग्रेजी | मराठी | नेपाली | गुजराती | बांग्ला | तमिल | तेलुगू | कन्नड | ओड़िया

सदस्य बनने के लिए सम्पर्क करें : patrika@nirankari.org | वार्षिक शुल्क ₹ 150/-

'पाक्षिक समाचार पत्र

एक नज़र

स्वयं भी पढ़ें, औरों को भी पढ़ायें

मिशन की सामाजिक/आध्यात्मिक गतिविधियों की जानकारी

- विचार प्रवाह
- दार्शनिक लेख
- प्रेरक प्रसंग
- बाल जगत/खेल जगत
- गीत, कविताएं
- स्वास्थ्य
- नारी जगत

हिन्दी | पंजाबी | मराठी

सदस्य बनने के लिए सम्पर्क करें : patrika@nirankari.org | वार्षिक शुल्क ₹ 150/-

कविता : गफूर 'स्नेही'

मौसम बरसात का

बड़ा मस्त मौसम बरसात का।
पानी बरसना है दिन रात का।

रास्ते छत मैदान हैं गीले।
गरमी के सारे ताव हुए ढीले।

खेत में बीज मेड़ हरियाई।
ताल तलैया नदी उबराई।

कुएं डबरे पानी ही पानीं
पानी से हरियाली की कहानी।

पेड़-पौधे लताएं फूलों भरीं।
झरने की लहरें दौड़ के उतरीं।

कोयल कूके नाच उठे मोर।
पता न चले शाम या भोर।

इन्द्रधनुष बादलों पर तना।
सात रंग से खूब सना।

कई त्योहार हैं धूम मचाते।
वर्षा मौसम खुशी मनाते।

बाल कविता : हरिप्रसाद धर्मक विशाल

बरसा पानी

रिमझिम रिमझिम बरसे पानी।
है नहाती धरती रानी।

पेड़-पौधे भी हैं नहाते।
पशु-पक्षी भी हैं हर्षाते।

शीतल शीतल पवन बह रही।
सबके मन को है छू रही।

चिड़ियां चीं चीं करती हैं।
बारिश देख खुश होती हैं।

फूल खिल उठे डाल डाल पर।
भंवरे बैठे फूल-फूल पर।

झूम उठी है सारी धरती।
महक उठी है ये जगती।

कभी न भूलो

❖ ज्ञान और कर्म के संगम से पृथ्वी स्वर्ग बनेगी।

❖ जीवन के विकास के लिए अभिमान का त्याग परम आवश्यक है। अभिमान से घृणा का जन्म होता है, प्यार का अन्त होता है।

– बाबा हरदेव सिंह जी

❖ अपनी आवश्यकताओं को सीमित कर लेना हमेशा सुखद होता है।

❖ हमारा दूसरे लोगों के साथ जो सम्बन्ध होता है, प्राय: उसी से हमारे सभी शोक और दु:खों का जन्म होता है। – शोपेनहावर

❖ मनुष्य जितना छोटा होता है उसका अहंकार उतना ही बड़ा होता है। – रीमो

❖ सुख प्राप्ति का यह भेद नहीं है कि आपको जो अच्छा लगे आप वह कर सकें बल्कि यह है कि जो आप करें, वह अच्छा हो।

– चेम्सफोर्ड

❖ गुरु के मिलाप से ही प्रभु का मिलाप होता है। प्रभु रूपी धन पर जितना मान करोगे उतना ही बढ़ेगा।

❖ प्यार और सत्कार का मूल स्त्रोत ब्रह्मज्ञान है।

– निर्मला ग्रोवर

❖ यदि तुम अज्ञानता के कारण भगवान को नहीं देख सकते तो इसका कारण यह नहीं कि भगवान नहीं है। – रामकृष्ण परमहंस

❖ जो भगवान को जान लेता है वह पाप करने से बच जाता है। – महाकवि संत गंगादास

❖ सत्य का प्रभाव स्वत: प्रकट होकर रहता है। सत्य में असीमित बल व तेज होता है।

– रवीन्द्रनाथ ठाकुर

❖ जिसका मन तृष्णा से रहित है, जो सतर्क और जाग्रत है, वह कभी भय से पीड़ित नहीं होता।

– महात्मा बुद्ध

❖ ईमानदारी और परिश्रम से प्राप्त धन– अर्थ है। और जो धन बेईमानी और शोषण से प्राप्त होता है वह अनर्थकारी होता है।

– स्वामी दयानन्द सरस्वती

❖ आत्मविश्वास असम्भव लगने वाले कार्यों को भी सम्भव बना देता है।

– पंडित श्रीराम शर्मा आचार्य

❖ कभी-कभी उन लोगों से भी शिक्षा मिलती है जिन्हें हम अभिमानवश अज्ञानी समझते हैं।

– प्रेमचन्द

❖ शत्रु भी जिसके गुणों की प्रशंसा करते हैं, वही पुरुष वास्तव में पुरुष है।

– गणेश शंकर विद्यार्थी

❖ अगर तुम आलसी हो तो अकेले मत रहो। अगर तुम अकेले हो तो आलसी मत बनो।

– जानसन

❖ तीन चीजों को कभी छोटा मत समझो– शत्रु, कर्ज, बीमारी। – अज्ञात

– संग्रहकर्ता : गुरचरण आनन्द

कहानी : रंजना बहल

खेल-खेल में

छुट्टी की घंटी बजते ही रघु का चेहरा खिल गया। क्यों न खिलता, मुंबई से उसके मामा जी कई सालों के बाद जो आ रहे थे। उससे बड़ी बात उसके लिये मामा जी माउजर टॉय गन लेकर आ रहे थे। कितना मजा आएगा, जब वह इस गन से निशाना लगाएगा वैसे भी उसका निशाना सबसे अच्छा है।

रघु के पापा रेलवे में थे। डिपार्टमेंट की तरफ से घर मिला हुआ था। स्कूल घर से थोड़ी ही दूर था इसलिए सारे बच्चे पैदल ही पटरियों के किनारे-किनारे जाते थे। बच्चे शरारत न करें ये तो हो नहीं सकता था। रघु जितना पढ़ाई में तेज था उतना शरारती भी। किसी के समझाने का कोई असर नहीं होता।

पटरियों पर शर्त लगाकर सिक्के रखना और ट्रेन के गुजरने के बाद ये देखना कि कौन जीता जो इस बात से तय होता कि किसका सिक्का ट्रेन के नीचे आकर चपटा हो गया है? ट्रेन की स्पीड के कारण कई सिक्के इधर-उधर छितरा जाते फिर भी ये खेल चलता रहता। स्टाफ वाले कई बार मना करते कि ये खतरनाक हो सकता है पर मानता कौन है?

सिक्के पटरियों पर रखने के बाद दूसरी शर्त की जीत के लिए एक-एक पत्थर लेकर खड़े हो जाते और जैसे ही ट्रेन निकलती पत्थर दो बोगी के बीच से फेंकते जिसका निकल गया वो जीता। जाहिर सी बात थी रघु इनमें से सबसे आगे था। उसे जानने वाले शर्त या तो लगाते नहीं थे या फिर चार बार सोचते लेकिन वह किसी न किसी नये बच्चे को पटा ही लेता था।

लेकिन आज बात कुछ और थी। वह बार-बार कभी मामा जी के बारे में सोचता कैसे दिखते होंगे अब? बहुत छोटा था जब उसके मामा जी विदेश जाकर बस गए थे। वैसे तो मामा जी बहुत कुछ ला रहे थे पर उसका मन माउजर टॉय गन पर ही अटक गया था।

आज उसका मन नहीं लग रहा था पर जब उसने दो लड़कों से शर्त लगा ली तो वह और खुश हो गया। सिक्का पटरी पर रखकर वह पत्थर लेकर खड़ा हो गया। ट्रेन आई पर ये क्या उसका सिक्का फिसलकर नीचे गिर गया। उसने हड़बड़ाकर पत्थर फेंका पर वह बोगी के बीच से निकलने के बजाय डिब्बे के बाहर झांकते एक व्यक्ति को लगा और ट्रेन अपनी स्पीड से आगे बढ़ गई। शर्त तो कोई नहीं जीता पर रघु का मन खराब हो गया। वह अनमना हो गया। आज पहली बार उससे ऐसी गलती हुई थी।

घर पहुँचा तो खुशी-खुशी तेजी से दरवाजे पर पहुँचा और बेल बजाने के लिए हाथ बढ़ाया ही था कि माँ की आवाज सुनाई दी। वह फोन पर बातें कर रही थी।

बातें सुनकर उसका सर घूम गया ''किसी को पता चल गया तो?'' उसने दरवाजे की घंटी बजाई। माँ ने दरवाजा खोला।

''ओह आ गए तुम। चलो रेडी हो जाओ।''

''मामा जी नहीं आये?''

''बस आते ही होंगे। न जाने किसने पत्थर फेंका सीधा सर पर लगा। अच्छा हुआ आँख बच गई। ड्रेसिंग हो गई है। पापा लेकर आ रहे हैं।'' माँ लगातार बोले जा रही थी।

रघु का मन बुझ सा गया। किसी को पता नहीं चला लेकिन वह तो जानता था कि गलती उसी की थी। हड़बड़ाहट में उसने छोटे पत्थर की जगह बड़ा पत्थर उठा लिया था और बिना निशाना लगाए उसे यूं ही फेंक दिया था। जल्दी से कपड़े बदलकर वह तैयार हो गया। एक-एक पल उसके लिए भारी हो रहा था।

आखिरकार कार के हॉर्न की आवाज सुनाई दी। उसने खिड़की का थोड़ा-सा पर्दा हटाया और बाहर झांका। पापा जी और मामा जी कार से उतर रहे थे। मामा जी के सर पर पट्टी बंधी थी। शर्ट पर खून के धब्बे साफ दिखाई दे रहे थे।?

''हाय राम ... ये क्या हो गया?''

''अरे कुछ नहीं दीदी ... चिंता न करो।'' जल्दी ठीक हो जायेगा। मामा जी माँ को आश्वस्त करने की कोशिश कर रहे थे। बातें करते-करते

वे लोग अंदर आ गए। माँ ने उन्हें पानी दिया और बैठने के लिए कहा। वह परदे के पास चुपचाप खड़ा हो गया।

तभी माँ ने आवाज़ लगाई, ''रघु जल्दी आओ। देखो कौन आया है?''

रघु अंदर आया और हाथ जोड़कर नमस्ते की। मामा जी एक पल को चौंके फिर मुस्कुरा के बोले– ''अरे यह कितना बड़ा और स्मार्ट हो गया है। यहाँ आओ बेटा।''

फिर माँ बोली, ''आप पहले फ्रेश हो लीजिए। कपड़े बदल लीजिये। मैं खाना लगाती हूँ।''

मामा जी के साथ समय कैसे बीता पता ही नहीं चला। मामा जी के पास इतना कुछ था बताने के लिए। इतने सारे गिफ्ट। कपड़े, खिलौने, जूते, चॉकलेट्स। वह बहुत खुश था। एक पल को वह सब भूल गया। रात में मामा जी ने उसे बहुत सारी कहानियां भी सुनाईं।

दूसरे दिन संडे था इसलिए चिंता नहीं थी।

अचानक मामा जी ने कहा, ''अरे हाँ मैं तुम्हें तुम्हारा सबसे प्यारा गिफ्ट देना तो भूल गया।''

''क्या?''

''माउजर टॉय गन। उम्मीद है संभलकर चलाओगे। किसी पर 'एक्सपेरिमेंट' नहीं करोगे मेरी तरह।''

रघु को 'काटो तो खून नहीं' वाली स्थिति हो गई।

मामा जी ने मुस्कुराते हुए कहा, ''ये हमारा सीक्रेट है। न तुम कहोगे न मैं।''

रघु की आँखों में आंसू आ गए।

''सॉरी मामा जी अब ऐसा कभी नहीं होगा।'' कहते हुए वह मामा जी से लिपट गया।

मामा जी ने उसे गले लगाते हुए कहा, प्यारा बच्चा।

शरारत वहाँ तक जहाँ से किसी को नुकसान न हो।

रघु का मन हल्का हो चला था। उसने सोच लिया कि अब बस ... अब वह ऐसे कोई शरारत नहीं करेगा जिससे किसी को चोट लगे या कोई नुकसान हो।

किट्टी

चित्रांकन एवं लेखन : विकास कुमार

ये देखो किट्टी, तुम्हारे पास कितने सारे खिलौने हैं।
लेकिन इसमें रोबोट नहीं है, मुझे रोबोट चाहिए।
अच्छा! तुम्हें रोबोट चाहिए। ठीक है, हम कल बाज़ार चलेंगे। लेकिन पहले तुम ये दूध पी लो।
अगले दिन
किट्टी, चलो तुम्हारा रोबोट लेने चलते हैं।

किट्टी, ये देखो रोबोट!
नहीं! मुझे ये नहीं पसंद। ये सुन्दर नहीं हैं।
मम्मी, मुझे ये रोबोट पसंद है।
ठीक है! यही रोबोट लेते हैं।
भाई साहब, हमें ये रोबोट चाहिए। ये कितने रुपये का है?
एक हजार रुपये का!
ठीक है, हमें ये दे दो।

तुम लोग मेरे रोबोट को हाथ भी मत लगाना। ये बहुत महंगा है।
सुनो किट्टी, ऐसे अपनी चीज़ों पर घमंड करना सही नहीं होता। वे सब तुम्हारे दोस्त हैं। तुम्हें उनसे ऐसे बात नहीं करनी चाहिए।
दोस्तों मुझे माफ़ कर दो। मुझे तुम सब से इस तरह बात नहीं करनी चाहिए थी। सॉरी!
तुम्हें अपनी गलती का एहसास हुआ, हमें अच्छा लगा। हमने तुम्हें माफ किया, किट्टी

बाल कविता : डॉ. रामलखन निरंकारी

मत काटो इन वृक्षों को

वृक्षों में भी जान वही है,
जो है हम सभी के अन्दर।
हरे भरे जो वृक्ष रहेंगे,
दुनिया होगी कितनी सुन्दर।
रखो सुरक्षित इन दरख्तों को,
मत काटो इन वृक्षों को।।

लेकर कार्बनडाइऑक्साइड,
दूर प्रदूषण ये करते हैं।
ऑक्सीजन देकर हमको,
जिन्दा हमको ये रखते हैं।
है फायदा दोनों पक्षों को,
मत काटो इन वृक्षों को।।

मानसून भी इनसे ही बनता,
वरना जग सारा जाता जल।
करें आज रक्षा का वादा,
क्योंकि आता नहीं कभी कल।
ना भूलें अपने लक्ष्य को,
मत काटो इन वृक्षों को।।

बाल कविता : सुमेश निषाद

आओ वृक्ष लगाएं

आओ वृक्ष लगाएं।
मिलकर विश्व बचाएं।

पेड़ देते ऑक्सीजन।
दूर करते प्रदूषण।

धरती पर जल है।
जल है तो कल है।

बचता है जब वृक्ष।
बचता है तब विश्व।

पेड़ सभी लगाएं।
आज अभी लगाएं।

पेड़ सच्चे साथी।
पेड़ बिना बर्बादी।

पेड़ वर्षा लाते।
पेड़ जीवन बचाते।

आओ वृक्ष लगाएं।
मिलकर विश्व बचाएं।

कहानी : दर्शन सिंह 'आशट'

दृढ़ निश्चय

रजनी की आयु होगी कोई पन्द्रह-सोलह वर्ष की। पोलियो के कारण उसकी दोनों टांगें बचपन से ही नकारा हो चुकी थीं लेकिन उसमें आगे बढ़ने का बहुत ज़ज़्बा और उत्साह था। वह अपने गाँव से ट्राई साइकिल पर तीन किलोमीटर की दूरी तय करके शहर में पढ़ने आती।

वर्षा होने के कारण स्कूल के आस-पास बड़ी-बड़ी घास हो गई थी। स्कूल का माली मोहन कई दिनों से बीमार था। इसी कारण स्कूल में घास काटने का बंदोबस्त नहीं हो सका। रजनी के कक्षा कमरे के पिछवाड़े भी काफी घास हो गया था। रजनी के इंचार्ज अध्यापक श्री मोहनलाल कह चुके थे कि बड़े हो चुके घास को कटवाना बहुत जरूरी है। आखिर वही हुआ जिसका डर था श्री मोहनलाल जी ने प्रकट किया था।

एक दिन रजनी की कक्षा के सभी छात्र-छात्राएं खेल के मैदान में खेल रहे थे। हिंदी के पीरियड की घंटी बजी तो सभी बच्चे अपनी कक्षा के कमरे की ओर आने लगे। छात्रों को कमरे में बैठे अभी थोड़ा ही समय हुआ था। वे अध्यापक जी के आने का इंतजार कर रहे थे। अचानक ही कक्षा में पीछे वाले बैंच पर बैठे राहुल ने अपने बैंच की टांग से लिपटा हुआ सांप देखा तो उसने

एकदम शोर मचा दिया– 'सांप-सांप।'

सभी छात्र-छात्राएं चिल्लाते हुए कमरे से बाहर भागने लगे। वह सांप कमरे के बाहर उगी घास से निकलकर पिछली खिड़की से कक्षा के कमरे के अंदर आ गया था।

रजनी कक्षा के मध्य में अपनी सहेली पूजा के साथ बैंच पर बैठी थी। पूजा ने उसे तत्काल बाहर निकलने के लिए कहा और उसकी मदद करने लगी लेकिन कमरे से एकदम बाहर निकलना रजनी के लिए सम्भव नहीं था।

रजनी ने देखा, सांप तीन फुट से ज्यादा बड़ा था। छात्रों के शोर से सांप घबराकर इधर-उधर भागने लगा। लेकिन कमरे का फर्श पक्का था। इसलिए सांप छिपने के लिए कोई बिल वगैरह ढूंढने लगा।

रजनी ने फौरन दिमाग से काम लिया। उसने अपना और अपनी सहेली पूजा का बैग खाली किया और दोनों को फर्श पर रख दिया।

रजनी की योजना काम कर गई।

ज्यों ही सांप फर्श पर पड़े एक खाली बैग में जा घुसा तो रजनी ने फुर्ति से बैंच से उठकर बैग का मुँह दोनों हाथों से मजबूती से बंद कर दिया।

सांप की पूछ बैग से बाहर दिख रही थी।

''रजनी छोड़ दे बैग। सांप तुम्हें डस लेगा। बैग छोड़ दो।'' बाहर से कमरे के अंदर यह सारा दृश्य देख रहे कुछ छात्र चिल्लाये लेकिन रजनी ने बैग का मुँह दोनों हाथों से बंद करके रखा।

तब तक स्कूल का सेवादार प्राणनाथ हाथ में लाठी लिए कमरे में आया। जब उसने रजनी को फर्श पर एक बैग के मुँह को दोनों हाथों से बंद किए देखा तो वह दंग रह गया।

प्राणनाथ चिल्लाया– ''ए लड़की, तुम इसे छोड़ दो। फटाफट करो। बैंच पर जा चढ़ो। मैं इसे अभी मार देता हूँ। तुम इतना खतरा मोल मत लो। सांप तुम्हें डंक मार सकता है।''

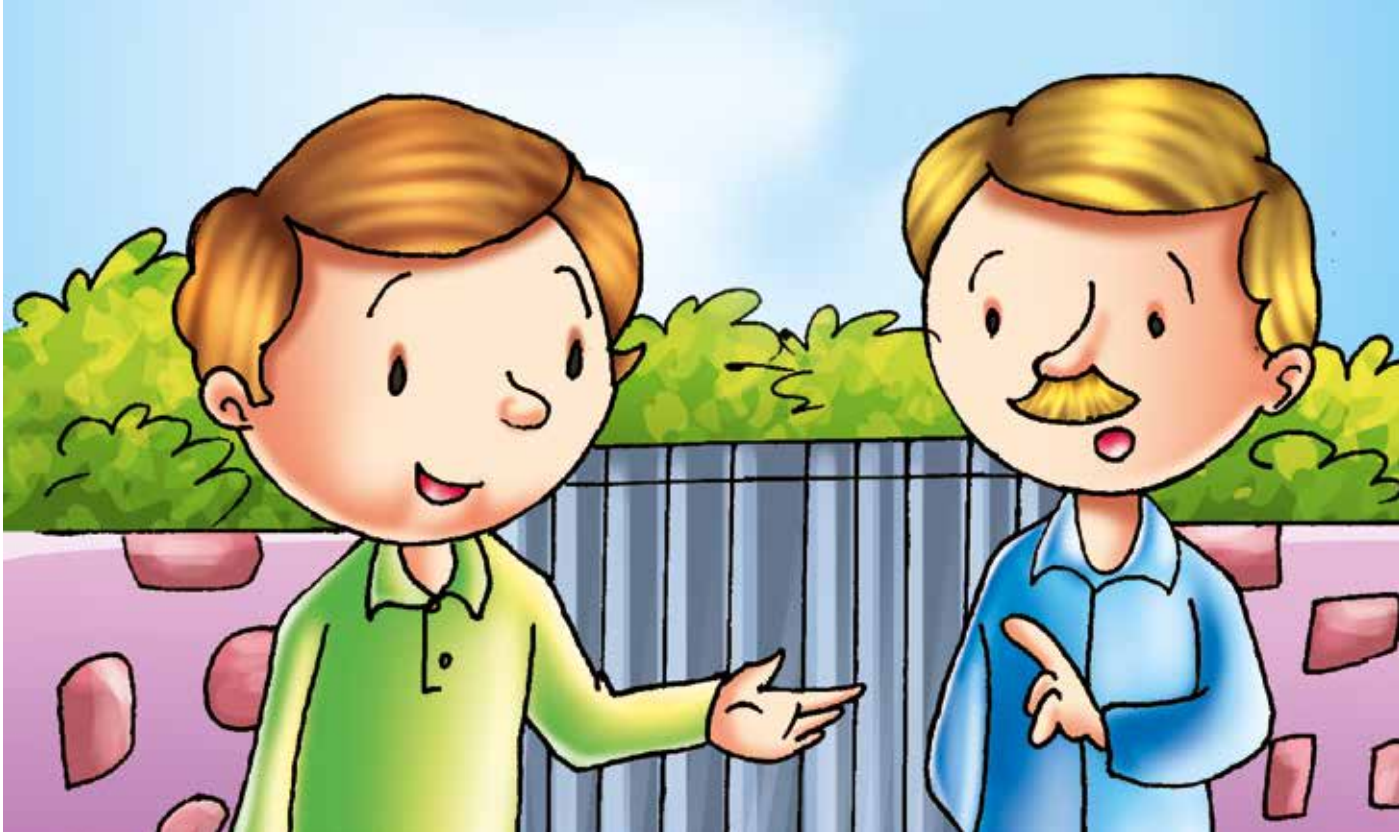

''अंकल जी, सांप अब बाहर नहीं आ सकता क्योंकि मैंने बैग का मुँह मजबूती से बंद किया हुआ है।'' रजनी ने जवाब दिया।

सांप बैग के अंदर फुंकार रहा था लेकिन रजनी बिल्कुल नहीं डर रही थी।

तभी स्कूल के प्रिंसीपल साहब, अध्यापक और अन्य कर्मचारी कमरे में आ गये। उन्होंने कहा– ''इस सांप को मारना ही ठीक रहेगा। तुम एकदम बैंच पर चढ़ जाओ। बैग में घुसे सांप को मारना एकदम आसान है।''

''नहीं नहीं अंकल, इसे मारना मत। अब यह मेरे चुंगल से बाहर नहीं निकल सकता और न ही किसी का नुकसान कर सकता है। मैं चाहती हूँ कि इसे चिड़ियाघर में दिया जाये।''– रजनी बोली।

विज्ञान अध्यापक रमेश जी बोले– ''बिल्कुल ठीक कह रही है रजनी।''

तब तक सांप को उसी बैग में अच्छी तरह बंद कर लिया गया और ऊपर से रस्सी कसकर बांध दी गई।

प्रिंसीपल साहब ने रजनी का सुझाव मान लिया। जब स्कूल का सेवादार और चौकीदार रजनी के साथ सांप को चिड़ियाघर वालों को सौंपने के लिए गये तो चिड़ियाघर के मुख्य प्रबंधक को सारी घटना का पता चला तो वह बोले– ''पहले तो मैं यह जानकर बहुत हैरान हूँ कि एक ऐसी लड़की ने इस सांप को काबू किया जो पोलियो की शिकार है। दूसरी बात यह है कि उसके मन में जीव-जन्तुओं के प्रति कितना स्नेह और प्यार है। वह जानती है कि सांप हमारा

दुश्मन नहीं है बल्कि वह खतरा महसूस होने पर ही व्यक्ति को डंक मारता है। इसके जहर से तो कई लाभकारी दवाएं बनती हैं।''

इस बार स्कूल का वार्षिक उत्सव हुआ तो रजनी को बहादुरी का सम्मान देने के लिए चिड़ियाघर के मुख्य प्रबंधक खुद आये और बोले– ''रजनी जैसी लड़की हमारे लिए एक मिसाल है जो शारीरिक अपंगता के कारण भी किसी से कम नहीं है। इसने अपनी सूझ-बूझ से न केवल अपने सहपाठियों को खतरे से बचाया बल्कि बड़ी बहादुरी के साथ सांप को काबू करके चिड़ियाघर तक पहुँचाने में मदद की है।''

सम्मान लेने के बाद जब रजनी अपनी सहेलियों से मिल रही थी तो कुछ सहेलियां कह रही थीं– ''रजनी, जो काम हम से भी न हो सका, वो तुम अकेली ने कर दिखाया। हमें तुम पर गर्व है।''

रजनी बोली– ''दृढ़ निश्चय हो तो बड़े-बड़े संकटों को भी आसानी से हल किया जा सकता है।''

तभी पंडाल में समारोह का आनन्द ले रहे रजनी के मम्मी-पापा ने आकर अपनी बेटी को गले लगाया तो रजनी को लगा जैसे उसकी बेजान टांगों में जान आ गई हो और ताकत भी दोगुनी हो गई हो।

बाल कविताएं : कमलसिंह चौहान

वर्षा जल

चुन्नू मुन्नू गुड़िया रानी,
गिरता है अब ठंडा पानी।
पानी गिरा और चेहरे खिले,
वर्षा में नहीं करो नादानी।।

सरिता गीता रोहित आये,
सिर पर छाते खोले आये।
छपक-छपक कर चलते देखो,
चारों तरफ है गिरता पानी।।

कुएं सरोवर नदियां भर गईं,
हरियाली से धरती सज गई।
झिंगुर दादुर पपीहा बोले,
मछली करती है मनमानी।।

कितनी सुन्दर वर्षा रानी,
सबको भाती लगे सुहानी।
पशु पक्षी भी मस्त हुए हैं,
वर्षा ऋतु की यही कहानी।।

पानी की प्याली

बदली छा गई काली-काली,
पानी की अब भर गई प्याली।
छलक रही अब आसमां से,
चिड़िया फुदकी डाली डाली।।

घुमड़-घुमड़कर बादल गरजे,
बरखा के अब बज गये बाजे।
रिमझिम रिमझिम करके उतरी,
सौंधी खुशबू संग हरियाली।।

हवा चली लहराई बूंदें,
पत्तों ने भी आंखें मूंदे।
गद्गद् हो गई सारी धरती,
बच्चियां भीगी भोली-भाली।।

बच्चों ने भी छाता खोला,
पीहू-पीहू कर पपीहा बोला।
सुन्दर पर्यावरण आंगन उतरा,
घर-आंगन में मिश्री घोली।।

पढ़ो और हँसो

माँ : बेटा, इन लड्डुओं को ऐसी जगह रख दो जहाँ चींटियां न पहुँच सके।
थोड़ी देर बाद माँ ने पूछा– लड्डू कहाँ रख दिये?
बेटा: पेट में। क्योंकि वहाँ चींटियां नहीं पहुँच सकतीं।

अजय : (मदन से) तुम बात करते समय मुँह में चीनी क्यों रख लेते हो?
मदन : क्योंकि गुरुजी ने हमेशा मीठा बोलने के लिए कहा है।

बेटा : (पापा से) पापा, वह जो गुलाब का पौधा लगाया है उसमें अभी तक जड़ नहीं आई।
पापा: तुम्हें कैसे पता चला बेटा।
बेटा : क्योंकि मैं उसे रोज उखाड़कर देखता हूँ।

बस कंडक्टर : (यात्री से) कहाँ से बैठे हो, टिकट ले लिया?
यात्री : अभी बैठा कहाँ हूँ, खड़ा हूँ। जब बैठूँगा तब टिकट ले लूँगा।

सोहन : आज मेरे बारे में अखबार में खबर छपी है।
मोहन : क्या खबर है?
सोहन : छपा है कि भारत की आबादी एक अरब से अधिक हो गई है। इसमें मैं भी शामिल हूँ।

एक राहगीर राह चलते अचानक चक्कर खाकर गिर पड़ा। उसे देख वहाँ भीड़ एकत्र हो गई।
एक ने कहा : पानी के छींटे मारो।
दूसरे ने कहा : अस्पताल ले जाओ।
तीसरे ने कहा : फौरन दूध-जलेबी खिलाओ।
इस बीच राहगीर बोला– सब अपनी-अपनी चला रहे हैं। कोई तीसरे आदमी की बात क्यों नहीं सुनता?

बंटी : राजू क्या तुम चीनी भाषा पढ़ सकते हो?
राजू : हाँ।
बंटी : कैसे?
राजू : अगर वह हिन्दी में लिखी हो।

सुप्रभ : (अपनी बहन अदिति से) आजकल मेरी जिन्दगी में सब कुछ उलटा चल रहा है।

अदिति : लेकिन भइया, मुझे तो आप सीधे चलते हुए ही दिखाई पड़ते हैं।

किरण अपनी छोटी बहन पुनीता के घर अपने सात बच्चों के साथ 10 दिन के लिए शहर घूमने गयी थी। आज वापस जाते समय पुनीता के पति ने जल्दी से कार बाहर निकाली स्टेशन छोड़ने के लिए।

किरण : आप इतना कष्ट क्यों कर रहे हैं, हम बस से चले जाएंगे।

पुनीता का पति बोला– कष्ट की कोई बात नहीं, हमें आज खुशी हो रही है। चलिए आपको जल्दी से स्टेशन पहुँचा देता हूँ। कष्ट तो तब होगा जब ट्रेन छूटने से आप वापस चली आयेगी।

भिखारी : साहब, पांच रुपये दे दीजिए। चाय पी लूँगा।

चाय पीने के बाद भिखारी बोला– साहब! भूख लगी है एक समोसा भी खिला दीजिए।

राहगीर : तुम्हें एक बार में ही मांग लेना चाहिए।

भिखारी : ठीक है साहब! तो फिर 100 रुपये का एक नोट दे दीजिए।

– आनन्द प्रकाश
(काली जगदीशपुर)

मोनू मोबाइल कम्पनी में इंटरव्यू देने गया।

सवाल : सबसे मशहूर नेटवर्क कौन सा है?

मोनू : जी, कार्टून नेटवर्क।

गृहिणी ने कहा– रामू आज तुमने बहुत कीमती फूलदान तोड़ दिया। आज के बाद ऐसी गलती की तो मार-मार के सिर गंजा कर दूँगी। समझे?

–जी समझ गया।

–क्या समझे?

–यही कि मालिक भी किसी ऐसी ही गलती आ अंजाम भुगत रहे हैं।

गुड़िया : (अमन से) भैया मैं बर्फ खाऊँगी।

अमन : गुड़िया ठण्डी बर्फ से तुम्हारा गला खराब हो जायेगा।

गुड़िया : भैया, मैं बर्फ गर्म करके खा लूँगी।

एक आदमी बहुत दिनों के बाद अपना प्लाट देखने गया। वहाँ संता कोठी बना कर बैठा था।

आदमी : यहाँ तो मेरा प्लाट था।

संता : मुझे नहीं पता, कोठी के नीचे आ गया होगा।

– सोनम कुशवाहा (हिरनछिपा, सागर)

जानकारीपूर्ण आलेख : अर्चना सोगानी

तीन आँखों वाला जन्तु

न्यूजीलैंड और उसके आसपास के द्वीपों पर छिपकली से मिलता-जुलता एक ऐसा जन्तु पाया जाता है जिसकी तीन आँखें होती हैं। यह जन्तु 'स्फेनोडोन' और 'टुआटेरा' नाम से जाता है। यह 75 से.मी. लम्बा और डेढ़ किलो वजनी होता है।

इतिहास सूत्रों के अनुसार यह जन्तु 25 करोड़ वर्ष पहले भी धरती पर पाया जाता था। इसकी सबसे बड़ी विचित्रता इसकी तीन आँखें हैं। हाँ, शंकु आकृति की तीसरी आँख सिर के बीच मस्तिष्क के ऊपर एक छेद में होती है। इस आँख के ऊपर एक झिल्ली होती है। जिसकी मदद से इसे अपने सोने और खाने के समय का अहसास होता है। शीत निद्रा में जाने का संदेशा भी इसी आँख से उसे मिलता है। इस आँख पर पड़ने वाला प्रकाश मस्तिष्क को संदेश भेजता है। डरपोक किस्म का यह जन्तु बिलों में रहता है। यह रात्रि में क्रियाशील होता है। इसका मुख्य भोजन मकोड़े, मेढक, चूहे आदि हैं।

जब यह जन्तु बहुत गुस्से में होता है तो अपने शरीर का रंग गिरगिट की तरह बदलना शुरू कर देता है। शिकार न मिलने पर भी यह अपना रंग बदलता रहता है।

इस जन्तु की स्फेनोडोन प्रजातियां समूह में रहना पसन्द करती हैं जबकि टुआटेरा प्रजातियां अलग-अलग रहना पसन्द करती हैं। कई बार इन दोनों प्रजातियों में लड़ाई भी छिड़ जाती है। जिसमें जीत अक्सर समूह में रहने वाली प्रजाति 'स्फेनोडोन' की होती है।

वैसे इसके बच्चे बिलों में ही पलते हैं। जन्म के 33 दिनों बाद हल्का-फुल्का चलना शुरू कर देते हैं। 3 वर्ष के बच्चे को वयस्क माना जाता है। आपको जानकर अचरज होगा। इस जन्तु की उम्र 90 से 100 वर्ष तक होती है। बुढ़ापे के सफर में इसके मुखड़े पर दाढ़ीनुमा बाल दिखाई देते हैं। यह किसानों का मित्र भी है क्योंकि खेती को नुकसान पहुँचाने वाले छोटे-मोटे जीव-जन्तुओं का यह अपने स्तर पर सफाया करता रहता है।

दक्षिण अफ्रीका के घने जंगलों में भी इस जन्तु की एक प्रजाति पाई जाती है जिसे 'जिट्राट पिद' कहा जाता है। इसका वर्ण भूरा व मस्तिष्क पर तीन आँखें होती हैं। तीन आँखों का रंग अलग-अलग होता है। जब इसे गुस्सा आता है तो इसकी आँखें सूर्ख लाल हो जाती हैं। जब यह शिकार करता है तो अपनी पूँछ से एक तरह की दुर्गन्ध छोड़ता है जिससे शिकार अच्छी तरह बेहोश हो जाता है फिर यह आराम से उसका खून चूसता है।

इसके पैरों में नुकीले कांटे होते हैं। जिनकी बदौलत यह जमीन पर छेद कर जमीन के नन्हें

कीटों को भी सफाया करता है। इसकी मादा बड़ी गुस्सैली होती है। उसे भूख तनिक सहन नहीं होती। मादा की तीसरी आँख गुस्से के कारण लाल अंगारे की तरह दमकती दिखाई देती है। वह अपनी भूख शान्त करने के लिए आसपास के छोटे-मोटे जीव-जनतुओं को अपने पैने दाँतों से घायल कर, बाद में उन्हें अपना भोजन बनाती है।

कांगों के जंगलों में भी एक त्रिनेत्र जन्तु मिलता है जिसे 'लेपसी ट्रिपल' कहा जाता है। यह अधिकतर पेड़ों के तनों पर दिखाई देता है। इसका मुख्य भोजन शहद, कच्चे फलों का रस व कीड़े-मकोड़े हैं। यह रात्रि में अपना शिकार खोजना

अधिक पसन्द करता है। दिन के उजाले में सूर्य की घातक किरणें इसकी त्वचा में कुछ जलन सी पैदा करती हैं। इसी कारण यह ऐसे हरे-भरे पेड़ों पर दुबका रहता है, जहाँ सूर्य की किरणें नहीं आती हो।

बाल कविता : मीरा सिंह

आए बादल

उमड़ घुमड़ कर आए बादल,
मन को बहुत लुभाए बादल।

बैंड बाजा ढोल नगाड़े,
आसमान में बजाए बादल।

रिमझिम बरस रहे फव्वारे,
धरती की प्यास बुझाए बादल।

सुख दुख जीवन के अपने,
आपस में मिल बतियाए बादल।

बहुत दिनों के बाद सुनो,
तितलियों को खूब नहलाए बादल।

बच्चे निकले घर के बाहर,
टप-टप बूंदें बरसाए बादल।

नाच रहा जंगल में मोर,
चहुँओर से घिर आए बादल।

अप्रैल अंक रंग भरो के श्रेष्ठ चित्र

1. **पूजा** — 12 वर्ष
   एफ-157, गली नं. 82,
   महावीर एन्क्लेव, दिल्ली

2. **ऋद्धि सैनी** — 8 वर्ष
   आर-जेड-जी 846-ए,
   राजनगर, पालम कॉलोनी, दिल्ली

3. **लवकुश** — 10 वर्ष
   गाँव व पोस्ट : भुड़कुड़ा जखनियां,
   जिला : गाजीपुर (उ.प्र.)

4. **विधिता चोपड़ा** — 11 वर्ष
   606-बी, आदर्श नगर,
   फगवाड़ा (पंजाब)

5. **विधिता भारद्वाज** — 6 वर्ष
   206, प्लाट नं. 15,
   सेक्टर-18 ए, द्वारका, दिल्ली

इनके अतिरिक्त जिनकी प्रविष्ठियों को पसन्द किया गया वे हैं-

सुजाता (पंजाला, कांगड़ा)
मानवी बंसल (मेन बाजार, लहरागागा),
हितेश खुराना (शास्त्री नगर, फरीदाबाद),
अंबर लाम्बा (वसुंधरा एंक्लेव, दिल्ली),
गगनप्रीत कौर (हांडीखेड़ा, अम्बाला),
अद्विक खन्ना (अम्बाला कैंट),
स्वर्णजीत (आदर्श नगर, फगवाड़ा),
कौशिकी (बिलासपुर),
गोविंद (दीप नगर, जालंधर),
इश्मित जैन (सेक्टर-19 सी, चंडीगढ़),
अजय कुमार (नेठवा, चुरू),
अद्वितीय मेहरा (सुन्दर नगर, अजमेर),
मानव (अवतार एंक्लेव, दिल्ली),
जिया (रानी बाग, दिल्ली),
खुशी (अशोक विहार कॉलोनी, नकोदर),
शिवम (पलवल),
हार्दिक गुप्ता (रायसिंह नगर, श्रीगंगानगर)।

जुलाई अंक रंग भरो

सामने के पृष्ठ पर एक चित्र दिया गया है। इस चित्र में सुन्दर-सुन्दर रंग भरकर **10 अगस्त** तक कार्यालय **'हँसती दुनिया'**, निरंकारी कॉम्पलेक्स, निरंकारी सरोवर के पास, निरंकारी कालोनी, दिल्ली-110009 को भेज दें।

- पांच श्रेष्ठ चित्रों के प्रतिभागियों के नाम (पते सहित) **अक्टूबर अंक** में प्रकाशित किये जाएंगे।
- चित्र के नीचे दिये गये रिक्त स्थान पर अपना नाम और पता अवश्य भरें।
- 15 वर्ष की आयु तक के बच्चे ही रंग भरकर भेज सकते हैं।

कृपया चित्र में रंग भरकर डाक द्वारा ही भेजें। 'ई-मेल' या 'व्हाट्सएप्प' से नहीं।

रंग भरो

नाम : ..... आयु : .....

पिता का नाम : .....

पूरा पता : .....

.....

..... पिन कोड : .....

आपके पत्र मिले

हम हँसती दुनिया को कई वर्षों से नियमित पढ़ रहे हैं। हमें हँसती दुनिया बहुत प्रिय है और इस पर गर्व करते हैं कि यह पत्रिका बच्चों को अच्छी शिक्षा देती है। हमारे पूरे परिवार की तरफ से हँसती दुनिया के परिवार का हार्दिक अभिनंदन।

– कनिका (कोटद्वार)

मैं हँसती दुनिया काफी समय से पढ़ता आ रहा हूँ। इसमें दी जाने वाली सामग्री वास्तव में ही बड़ी रोचक होती है। इसमें प्रकाशित सभी रचनाएं मन को लुभाने वाली होती हैं। हँसती दुनिया वाकई हमारी पारिवारिक पत्रिका है। एक बेहतरीन बाल पत्रिका के लगातार प्रकाशन पर हम सन्त निरंकारी मण्डल के कृतज्ञ हैं।

– बलतेज कोमल (पटियाला)

मैं हँसती दुनिया की सदस्य हूँ। मुझे इससे अच्छी सीख मिलती है। मैं यह पत्रिका अपने साथियों को भी पढ़ने को देती हूँ। मुझे इसमें कहानियां, चित्रकथाएं व रंग भरो प्रतियोगिता बहुत अच्छी लगती हैं। मैं हँसती दुनिया की हर माह प्रतीक्षा करती हूँ।

मैं परमात्मा से प्रार्थना करती हूँ कि यह पत्रिका इसी प्रकार हर बार सभी के लिए ज्ञान का भण्डार लेकर आये। – प्रसून बिष्ट (सीला)

मैं हँसती दुनिया का पुराना पाठक हूँ। मैं इस पत्रिका को बड़े ही चाव से पढ़ता हूँ। मुझे इसमें खासतौर पर 'कभी न भूलो', 'पढ़ो और हँसो' तथा कहानियां बहुत पसंद हैं। – चन्द्रशेखर (घड़साना)

आओ जानें! पक्षियों के बारे में

- भूरे गले और नोकदार पूंछ वाली अबाबील चिड़िया 250-300 किलोमीटर प्रतिघंटे की रफ्तार से उड़ती है।
- कबूतर लम्बी से लम्बी यात्रा करने के बाद भी बिना रास्ता भूले अपने स्थान पर वापस आ जाते हैं।
- कैसोवरी नामक चिड़िया अपने चाकू जैसे पंजे से आदमी की हत्या कर सकती है।
- वेम्पायर बैट नामक चमगादड़ केवल खून चूसकर ही जिन्दा रहता है।
- पेरेग्रीन फाल्कन नामक शिकारी बाज जब 45 डिग्री के कोण पर झपटता है तो उसकी रफ्तार 350 किलोमीटर प्रतिघंटा हो सकती है।
- पूर्वी दक्षिण अमेरिका के टौकन पक्षी की चोंच उसके शरीर के बराबर होती है।
- बाल्ड ईगल का घोसला 2.9 मीटर चौड़ा, 6 मीटर गहरा तथा 6 टन भारी हो सकता है।
- दक्षिणी ध्रुवीय पेंग्विन 18 मिनट तक पानी के अन्दर रह सकता है।
- काली कुररी नामक चिड़िया घोसला छोड़ने के बाद लगातार तीन-चार साल तक हवा में रहती है।
- हंस 8200 मीटर की ऊँचाई पर भी उड़ सकते हैं।
- उत्तर ध्रुवीय कुररी चिड़िया 22000 किलोमीटर लम्बी उड़ान भर सकती है।

– प्रस्तुति : किरणबाला

Video & Audio Webcasts on www.nirankari.org - Every month

SANT NIRANKARI MISSION

Prescribed Dates 21st & 22nd , Date of Publication: 16th & 17th (Advance Month)
Posted at LPC Delhi RMS Delhi - 110006

Registered with the : Delhi Postal Regd. No. DL (N) 136/2021-2023
Registrar of Newspaper : License No. U (DN) -23/2021-2023
For India Under RNI No. 25672/1973 : Licensed to post without Pre-payment

सन्त निरंकारी मण्डल द्वारा नियमित रूप में प्रकाशित होने वाली

पत्र-पत्रिकाएं

सन्त निरंकारी

❖ ग्यारह भाषाओं में प्रकाशित होने वाली **'सन्त निरंकारी'** विशुद्ध आध्यात्मिक मासिक पत्रिका है जिसमें सद्गुरु वचनामृत एवं अनुभवी लेखकों की तर्कपूर्ण रचनाएं प्रकाशित की जाती हैं।

एक नज़र

❖ तीन भाषाओं में प्रकाशित होने वाले पाक्षिक समाचार-पत्र **'एक नज़र'** में सद्गुरु माता जी के दिव्य वचन एवं मिशन की गतिविधियों के समाचार प्रकाशित होते हैं।

हँसती दुनिया

❖ चार भाषाओं में छपने वाली बच्चों के बौद्धिक विकास की अनूठी बाल मासिक **'हँसती दुनिया'** में रोचक कहानियां, ज्ञानवर्द्धक वैज्ञानिक लेख, कविताएं एवं चित्रकथाएं समाहित होते हैं।

उपरोक्त पत्र-पत्रिकाओं की सदस्यता हेतु सम्पर्क करें :-

Tel. : 011-47660200 (Extn. : 862)
Email : patrika@nirankari.org

पाठकों के लिए सूचना ...

❖ क्या आपको हँसती दुनिया (हिन्दी) मासिक निरन्तर मिल रही है?

❖ पत्रिका विभाग द्वारा हर माह 22 तारीख को पत्रिका Dispatch (प्रेषित) कर दी जाती है। यदि एक सप्ताह तक भी आपको प्राप्त न हो तो कृपया–

1. अपने नजदीकी पोस्ट ऑफिस से सम्पर्क करें।
2. पत्रिका विभाग को फोन नं. 011-47660200 अथवा Help Line 011-47660360 पर सूचित करें ताकि आपको उसकी दूसरी प्रति भिजवाई जा सके।

पत्रिका विभाग, सन्त निरंकारी मण्डल,
निरंकारी कॉम्पलेक्स, बुराड़ी रोड़, दिल्ली-110009

पत्र-पत्रिकाओं के प्रसार अभियान में योगदान देकर सद्गुरु माता जी के आशीर्वाद के पात्र बनें।